सुविचार

जिस समय जिस काम के लिए प्रतिज्ञा करो, ठीक उसी समय पर उसे करना ही चाहिये, नहीं तो लोगो का विश्वास उठ जाता है।

साप्ताहिक

RNI.NO. MPHIN/2015/76299

युवा प्रदेश

Freedom of Speech

पेज -7

वर्ष 6, अंक 47 | भोपाल, शुक्रवार 30 अप्रैल 2021 | पृष्ठ -8 | मूल्य 3 रुपये

कोरोना के बीच पंचायत चुनाव पर घिरी योगी सरकार

- कहा-वह खुद कोरोना के चलते पंचायत चुनाव के पक्ष में नहीं थी

लखनऊ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश में कोरोना महामारी के बीच पंचायत चुनाव कराने को लेकर कटघरे में आई योगी सरकार ने सफाई दी है। सरकार का कहना है कि वह कोरोना के मद्देनजर राज्य में पंचायत चुनाव कराने की इच्छा नहीं रखती थी, लेकिन इलाहाबाद हाई कोर्ट के आदेश का पालन करते हुए ऐसा करना पड़ा, ताकि 10 मई तक चुनाव प्रक्रिया पूरी हो सके। एक सरकारी प्रवक्ता ने कहा, 'पिछले साल दिसंबर में चुनाव होने वाले थे। महामारी के कारण पंचायतों के पुनर्गठन और परिसीमन में देरी हुई। याचिकाओं और हाई कोर्ट के बाद के फैसले ने राज्य सरकार को चुनाव कराने के लिए मजबूर किया।' प्रवक्ता ने कहा, 'उत्तर प्रदेश राज्य के खिलाफ विनोद उपाध्याय की तरफ से दायर एक याचिका में, इलाहाबाद हाई कोर्ट ने 4 फरवरी के अपने आदेश में राज्य निर्वाचन आयोग को 30 अप्रैल तक पंचायतों के लिए चुनाव प्रक्रिया को पूरा करने का निर्देश दिया। 15 मार्च तक आरक्षण और आवंटन की प्रक्रिया करने का निर्देश दिया।'

कोरोना कहर के बीच पश्चिम बंगाल में फिर बंपर वोटिंग

सभी सीटों पर लगभग 78 फीसदी से ज्यादा मतदान

चुनाव आयोग ने पुलिस अधिकारियों का किया ट्रांसफर

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव के सातवें चरण की वोटिंग सुबह 7 बजे से शुरू हो गई थी। इस चरण में 34 सीटों पर मतदान संपन्न हो गया है। यहां कुल 284 उम्मीदवार किस्मत आजमा रहे हैं। इनमें 37 महिला उम्मीदवार भी मैदान में हैं। वोटिंग की बात करें तो लगभग सभी सीटों पर 78 फीसदी से ज्यादा मतदान हुआ है। चुनाव आयोग ने मतदान के बीच सोमवार को बंगाल के कुछ पुलिस अफसरों का ट्रांसफर किया है। आयोग ने डायरेक्टोरेट ऑफ इकोनॉमिक ऑफेंस में इंस्पेक्टर शांतानु सिन्हा बिस्वास का जलापाईगुड़ी के ट्रांसफर किया है। उन पर बीजेपी ने पोस्टल बैलेट में हेरफेर करने का आरोप लगाया था। आसनसोल-दुर्गापुर के असिस्टेंट कमिश्नर श्रीमंत कुमार बंदोपाध्याय को बोलपुर में सब डिवीजनल ऑफीसर बनाकर भेजा गया है। बोलपुर के शुभेंद्र कुमार कुछ दिन पहले कोरोना पॉजिटिव हुए थे। मालदा के बखरा में बीजेपी के पोलिंग एजेंट शंकर साकर ने आरोप लगाया था कि टीएमसी के लोगों ने उसे जबरदस्ती बूथ नंबर 91 से भगा दिया। शंकर ने कहा कि टीएमसी के स्थानीय कार्यकर्ताओं ने कहा कि मैं यहां वोटर नहीं हूं, इसलिए मुझे यहां से जाना होगा।

राहुल गांधी ने केंद्र से की अपील

कोरोना वैक्सीन मुफ्त में दिलाए मोदी सरकार

नई दिल्ली (एजेंसी)। कोरोना संक्रमण की दूसरी लहर के कारण देशभर में हालात बेकाबू होते जा रहे हैं। कई राज्यों में ऑक्सीजन और बेड की कमी की वजह से कोरोना संक्रमित मरीजों की मौत हो रही है। वहीं, कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने केंद्र पर हमला बोलते हुए मांग की है कि सरकार लोगों को कोरोना वैक्सीन मुफ्त में दिलाए। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने अपने ट्विटर अकाउंट पर लिखा, चर्चा बहुत हो चुकी है। देशवासियों को वैक्सीन मुफ्त मिलनी चाहिए। बात खत्म, मत बनाओ भारत को भाजपा सिस्टम का विक्टिम। इससे पहले, राहुल गांधी ने कहा था कि सद्भाव से केंद्र सरकार से अपील है कि वह पीआर और अनावश्यक परियोजनाओं पर खर्च करने की बजाय टीका, ऑक्सीजन और अन्य स्वास्थ्य सेवाओं पर ध्यान दे।

ऑक्सीजन के आयात में होगी और आसानी

सरकार ने बंदरगाहों से कहा- ऑक्सीजन लाने वाले जहाजों से चार्ज न लें; सिंगल पेज फॉर्म से मिलेगा कस्टम क्लियरेंस

नई दिल्ली (एजेंसी)। कोरोना से लड़ाई में देश में ऑक्सीजन की किल्लत हो रही है। इसको खत्म करने के लिए सरकार ने बड़ी राहत दी है। केंद्र सरकार ने सभी बंदरगाहों से कहा है कि वे ऑक्सीजन और इससे संबंधित उपकरण लाने वाले जहाजों से किसी भी प्रकार का चार्ज न लें। सरकार ने फिलहाल तीन महीने तक चार्ज न लेने के लिए कहा है। आवश्यकता पड़ने पर चार्ज में छूट को आगे भी बढ़ाया जा सकता है। मिनिस्ट्री ऑफ पोर्ट्स, शिपिंग एंड वाटरवेज की ओर से जारी बयान के मुताबिक, सभी बंदरगाहों से कहा गया है कि वे ऑक्सीजन और

इससे संबंधित उत्पाद लाने वाले जहाजों को प्राथमिकता दें। इसमें मेडिकल ग्रेड ऑक्सीजन, ऑक्सीजन टैंक, ऑक्सीजन बोतल, पोर्टेबल ऑक्सीजन जेनरेटर और ऑक्सीजन कंसंट्रेटर लाने वाले जहाज शामिल हैं। सरकार ने जिन चार्ज को हटाने के लिए कहा है, उनमें बंदरगाह ट्रस्ट की ओर से लगाए जाने वाले और भंडारण चार्ज भी शामिल हैं। देश में मेडिकल ऑक्सीजन की किल्लत को खत्म करने के लिए सरकार ने इसके आयात पर लगने वाली बेसिक कस्टम ड्यूटी और हेल्थ सेस की छूट दी है। यह छूट तीन महीने के लिए दी गई है। ऑक्सीजन और इससे संबंधित उत्पादों के आयात पर 5 फीसदी बेसिक कस्टम ड्यूटी लगाई जाती है। इसके अलावा ऑक्सीजन के आयात पर 10 फीसदी हेल्थ सरचार्ज और 18 फीसदी सेस लगता है।

कोरोना पर सामने आई सरकार की बेबसी

लोगों से कहा- वक्त आ गया है, जब हम घर के अंदर भी मास्क पहनें और किसी मेहमान को न बुलाएं

नई दिल्ली (एजेंसी)। बढ़ते कोरोना संक्रमण पर सरकारें भी बेबस नजर आ रही हैं। सोमवार को नीति आयोग ने कहा, अब वक्त आ गया है, जब हमें घर के अंदर परिवार के साथ रहते हुए भी मास्क पहनना चाहिए। साथ ही इस बात का भी ध्यान रखें कि मेहमानों को घर पर न बुलाएं।

नीति आयोग में हेल्थ मिनिस्ट्री के मेंबर डॉक्टर वीके पॉल ने कहा- डर या भय न फैलाएं, इससे हालात सुधरने की बजाए बिगड़ सकते हैं। अच्छी बात यह है कि अब लोग घर में भी मास्क लगाने लगे हैं। नीति आयोग में हेल्थ मिनिस्ट्री के मेंबर डॉक्टर वीके पॉल ने कहा- कि रिसर्च बताती है कि अगर एक व्यक्ति फिजिकल डिस्टेंसिंग न अपनाए तो वह 30 दिन में 406 लोगों को इन्फेक्ट कर सकता है। अगर कोरोना पॉजिटिव व्यक्ति अपना फिजिकल एक्सपोजर 50 फीसदी तक कम कर दे तो एक महीने में 15 लोग और 75 फीसदी कम करने पर ढाई लोगों को ही इन्फेक्ट कर पाएगा। होम आइसोलेशन में अनइन्फेक्टेड व्यक्ति ने मास्क लगाया है और इन्फेक्टेड व्यक्ति ने मास्क नहीं लगाया है तो इन्फेक्शन का खतरा 30 फीसदी रहेगा। अगर इन्फेक्टेड और अनइन्फेक्टेड व्यक्ति, दोनों ने मास्क लगाया हो तो इन्फेक्शन का खतरा घटकर 1.5 फीसदी ही रहेगा। सरकार के मुताबिक, पूरे देश में अब तक वैक्सीन के 14 करोड़ से ज्यादा डोज दिए जा चुके हैं। 1 करोड़ से ज्यादा लोगों को दूसरा डोज भी लग चुका है। झारखंड, गुजरात, छत्तीसगढ़ जैसे 12 राज्यों ने अपने 90 फीसदी से ज्यादा हेल्थवर्कस को वैक्सीन का पहला डोज दे दिया है। ऑक्सीजन की कमी से जुड़े एक सवाल पर कहा गया कि सरकार ने अस्पतालों को ऑक्सीजन का सही तरीके और सावधानी से इस्तेमाल करने को कहा है। हमें ऑक्सीजन का लीकेज भी रोकना होगा। महिलाओं से जुड़े एक जरूरी सवाल पर सरकार ने कहा है कि मासिक धर्म या माहवारी (पीरिएड्स) के दौरान भी वैक्सीन लगवाना सुरक्षित है। यानी वैक्सीन का पीरिएड्स से कोई संबंध नहीं है।

कोरोना से सीधी जंग

अब सशस्त्र बलों से रिटायर डॉक्टरों को भी बुलाया जा रहा मोर्चे पर

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश में कोरोना महामारी की दूसरी लहर के बीच कोविड से जंग में अब सशस्त्र बलों से रिटायर्ड हो चुके डॉक्टर व मेडिकल पर्सन मोर्चा संभालेंगे। सीडीएस जनरल बिपिन रावत ने सोमवार को यह जानकारी दी। जनरल रावत ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात कर कोरोना महामारी से निपटने के लिए सशस्त्र बलों द्वारा की जा रही तैयारियों और ऑपरेशन की समीक्षा की। सीडीएस ने पीएम को

बताया कि अस्पतालों में डॉक्टरों की मदद के लिए बड़ी संख्या में नर्सिंग स्टाफ को तैनात किया जा रहा है। जनरल रावत ने पीएम मोदी से कहा कि आर्म्ड फोर्सेज से पिछले दो साल में रिटायर्ड हो चुके या समय पूर्व रिटायरमेंट ले चुके सभी मेडिकल पर्सनल को उनके घर के पास के कोविड सेंटर में काम करने के लिए बुलाया जा रहा है। इसके अलावा रिटायर्ड हो चुके अन्य मेडिकल ऑफिसर्स भी इमरजेंसी हेल्पलाइन के जरिये मेडिकल कन्सल्टेशन देने के लिए तैयार हैं।

कंगना के बाद प्रज्ञा के बिगड़े बोल:

भोपाल सांसद ने कहा- बंगाल में ताड़का की सरकार और मुमताज का लोकतंत्र, वहां राष्ट्रपति शासन लगना चाहिए

भोपाल। पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी की जीत को लेकर मध्यप्रदेश में भी सियासत शुरू हो गई है। भोपाल सांसद प्रज्ञा ठाकुर ने पश्चिम बंगाल सरकार पर विवादित टिप्पणी की है। उन्होंने सोशल मीडिया पर पोस्ट किया है। उन्होंने पश्चिम बंगाल को मुमताज का लोकतंत्र बताते हुए हिंदू कार्यकर्ताओं की निर्मम हत्या, बलात्कार की घटनाओं पर नाराजगी जाहिर की और लिखा- अब टिट फॉर टैट करना ही होगा यानी जैसे को तैसा। उन्होंने कहा कि अब लोगों को असम में शरण लेना पड़ रही है। इसके लिए एकमात्र उपाय राष्ट्रपति शासन और हत्या ही है। संतों और वीरों की भूमि पर ताड़का का शासन हो गया। हालांकि उनकी पोस्ट के बाद लोगों ने प्रतिक्रिया दी है। इसको लेकर सोशल मीडिया पर बहस भी शुरू हो गई है। किसी ने इसे कश्मीर बनने की शुरुआत बताया, तो किसी ने इसे भाजपा की हार की खीज बताया। लोगों ने इसके लिए भाजपा को भी घेरा है। दिग्विजय सिंह को हराया था प्रज्ञा ने प्रज्ञा ठाकुर ने पिछले चुनाव में भोपाल लोकसभा सीट से कांग्रेस नेता और पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह को हराया था। इसके बाद से वे कई मुद्दों पर विवादित टिप्पणी कर चुकी हैं। इसके बाद भाजपा को किनारा करना पड़ा। ताजा मामले में इसी तरह की टिप्पणी कंगना रनौत कर चुकी हैं, जिनका ट्वीटर हैंडल सस्पेंड किया गया।

महिला-बाल विकास विभाग की पहल

MP में कोरोना से अनाथ हुए बच्चों के भरण-पोषण की जिम्मेदारी सरकार लेगी

भोपाल। मध्यप्रदेश में कोरोना से अनाथ हुए बच्चों की देखभाल और भरण-पोषण सरकार करेगी। इसके लिए महिला-बाल विकास विभाग ने स्पॉन्सरशिप योजना शुरू की है। शासन ऐसे बच्चे, जिनके माता-पिता का निधन कोरोना के कारण हो गया है अथवा जिनके माता-पिता इस बीमारी की वजह से अस्पताल में भर्ती हैं, उनके भरण-पोषण की जिम्मेदारी लेने का निर्णय लिया गया है। सबसे पहले ग्वालियर जिले में इसके तहत फिट फेसिलिटी केंद्र की शुरुआत की जा रही है। जिले में संचालित शासकीय विद्यालय और छात्रावासों को ऐसे बच्चों की देखरेख एवं संरक्षण के लिए फिट फेसिलिटी केंद्र घोषित कर बच्चों की उचित देखभाल तथा संरक्षण प्रदान किया जाएगा। साथ ही स्वयंसेवी संस्था, सामाजिक कार्यकर्ता आदि को जोड़कर बच्चों को आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएंगी।

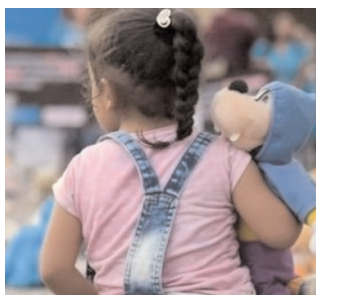

14 शहरों में आश्रय पर साढ़े 3 करोड़ खर्च होंगे: नगरीय विकास एवं आवास मंत्री भूपेन्द्र सिंह ने जानकारी दी है कि 14 शहरों में आश्रय स्थलों के निर्माण के लिए 3 करोड़ 50 लाख रुपए स्वीकृत किए गए हैं। हर आश्रय स्थल को 25 लाख रूपए स्वीकृत किए गए हैं। इसके साथ ही वर्तमान में संचालित 119 आश्रय स्थलों के संचालन एवं संधारण के लिए 89 लाख 94 हजार रूपए आवंटित किए गए हैं। वर्तमान में मध्यप्रदेश राज्य के 51 जिला मुख्यालयों और एक लाख से अधिक आबादी वाले 4 नगरीय निकाय डबरा, इटारसी, नागदा एवं पीथमपुर में 119 आश्रय स्थल संचालित हैं।

योजना का उद्देश्य जैविक परिवार से अलग होने से रोकना

इस योजना के अंतर्गत बच्चों को शासकीय एवं निजी प्रायोजन सहायता का मुख्य उद्देश्य उनके जैविक परिवार से अलग होने से रोकना है। साथ ही बाल देखरेख संस्था में रहने वाले बच्चे, मुक्त कराए गए बच्चों को उनके जैविक परिवार में भेजकर पुनर्वास स्थित करना एवं उनका समग्र विकास करना तथा सामाजिक रूप से सक्षम परिवारों द्वारा आर्थिक रूप से कमजोर परिवार का बाल देखरेख संस्था में रहने वाले बच्चों के विकास में सहयोग के लिए जोड़ना है।

वन्य प्राणियों को कोरोना से बचाने की कवायद: हैदराबाद के शेरों में कोरोना के लक्षण मिलने के बाद इंदौर के प्राणी संग्राहलय में उबाल कर रोज दिया जा रहा मटन

इंदौर। देश में पहली बार हैदराबाद के नेहरू पार्क में 8 शेरों में कोरोना के लक्षण मिलने के बाद देशभर के सभी चिड़ियाघर प्रबंधन को अलर्ट किया गया है। सेंट्रल जू अथॉरिटी ने सभी चिड़ियाघर को एक सर्कुलर जारी किया है और जानवरों की देखरेख करने की हिदायत दी है।

इसी के तहत शेरों को अब उबला मटन दिया जा रहा है। शेर और बाघ के बाड़ों के आसपास केमिकल डाला जा रहा है। सावधानी के तौर पर पिंजरे और बाड़े के आसपास अन्य कर्मचारियों को आने-जाने पर प्रतिबंध लगा दिया गया। कमला नेहरू प्राणी संग्रहालय में कोरोना महामारी के चलते सेंट्रल जू अथॉरिटी और इंदौर जिला प्रशासन के सर्कुलर के अनुसार सभी दुर्लभ वन्य प्राणियों की देखभाल की जा रही है। इसमें कोरोना प्रोटोकॉल का भी पूरी तरह से पालन किया जा रहा है। जिसमें सुबह-शाम वन्य प्राणियों के आसपास सैनेटाइजर का छिड़काव, संक्रमण से बचाने के लिए उनके डाइट चार्ट में बदलाव किया जा रहा है। पोषक खानपान भी बढ़ाया गया है। पशु पक्षियों के केयरटेकर जो इन्हें खाना देते और देखभाल करते हैं वह भी मास्क,ग्लब्ज और सैनेटाइज करके ही वन्य प्राणियों तक पहुंच पा रहे हैं। इंदौर के चिड़ियाघर में हाल ही में शेरनी मेघा ने तीन शावकों को भी जन्म दिया था। इनमें से एक की मौत हो गई लेकिन दो शावक अभी भी मां मेघा के साथ मौजूद हैं। दोनों शावकों को उनकी मां दूध नहीं पिला पा रही थी। इसलिए चिड़ियाघर प्रशासन ने बच्चों की बिगड़ती हालत देखकर इम्यूनिटी बूस्ट करने वाली दवाओं के साथ ही बॉटल के जरिए उन्हें बकरी का दूध पिलाने का फैसला किया है। फीडिंग के साथ ही इन दोनों शावकों को पोषक आहार भी दिया जा रहा है। इस दौरान कोरोना प्रोटोकॉल का भी पालन किया जा रहा है। फिलहाल दोनों शावक खतरे से बाहर हैं।

जूनियर डॉक्टर एसोसिएशन के अध्यक्ष बोले-

हमारी मांगे नहीं मानी तो गुरुवार से कोविड वार्ड में भी ड्यूटी न करने पर मजबूर होंगे

भोपाल। भोपाल में हमीदिया अस्पताल में जूनियर डॉक्टर (जूडा) एसोसिएशन ने बुधवार को नॉन कोविड सेवाओं का बहिष्कार कर हड़ताल पर चले गए। साथ ही जूडा ने मांगों पर कार्रवाई नहीं होने पर गुरुवार से कोविड वार्ड में ड्यूटी ना करने पर मजबूर होने की भी चेतावनी दी हैं। जूनियर डॉक्टर एसोसिएशन के मध्य प्रदेश के अध्यक्ष डॉ. अरविंद मीणा ने कहा कि हम कोरोना के बढ़ते संक्रमण को देखते हुए मौजूदा समय में हड़ताल नहीं करना चाहते। लेकिन 6 महीने से लगातार शांतिपूर्वक बातचीत के बावजूद आश्वासन देकर सरकार हमारी मांगों पर कोई कार्रवाई नहीं कर रही है। मीणा ने कहा कि प्रदेश भर के जूनियर डॉक्टर नॉन कोविड सेवाओं का बहिष्कार करेंगे। इसमें ओपीडी, आईपीडी, और इमरजेंसी में अपनी सेवा बंद रखेंगे। वहीं, जूडा भोपाल के अध्यक्ष डॉ हरीश पाठक ने कहा कि 7 मई सुबह 8 बजे तक हमारी मांगे नहीं मानी जाती है तो कोरोना सेवा का भी बहिष्कार किया जाएगा। इसकी पूरी जिम्मेदारी प्रबंधन और सरकार की होगी। जूडा ने हाल ही में 8 अप्रैल से 12 अप्रैल तक सांकेतिक हड़ताल की थी, जिसे चिकित्सा शिक्षा मंत्री के आश्वासन के बाद खत्म किया था। हालांकि बुधवार को जूडा के नॉन कोविड मरीज की इमरजेंसी सेवा में ड्यूटी नहीं करने से ज्यादा प्रभाव नहीं पड़ा। इसका कारण इमरजेंसी सेवा में कम मरीजों का आना और पर्याप्त संख्या में सीनियर रेजिडेंट और कंसल्टेंट के तैनात होना है।

यह है जूनियर डॉक्टरों की मांग: पिछले साल मुख्यमंत्री ने कोरोना वारियर को 10 हजार रुपए प्रतिमाह सम्मान निधि देने का वादा किया था, एक साल बाद भी कोरोना वारियर को राशि नहीं मिली। सरकार ने 2018 में वादा किया था कि प्रति वर्ष जूनियर डॉक्टरों के मानदेय में 6 प्रतिशत की वृद्धि होगी।

भोपाल में लॉकडाउन में रोकने पर विवाद

पुलिस ने बाइक सवारों को रोका, नाराज युवकों ने किया हंगामा; मोबाइल फोन पर शूट करते हुए बोले- वर्ग विशेष को निशाना बनाया जा रहा

भोपाल। भोपाल में अब पुलिस के रोके जाने पर लोग भड़के लगे हैं। ऐसे ही एक मामले में भारत टॉकीज तिराहे पर बाइक सवार से पूछताछ करना पुलिस को भारी पड़ गया। बड़ी संख्या में लोगों की भीड़ ने पुलिसकर्मियों को घेर लिया। इस दौरान कुछ लोग मोबाइल फोन पर वीडियो बनाते हुए पुलिस पर एक वर्ग विशेष को परेशान करने के आरोप लगाते रहे। लोगों के मारपीट के आरोपों को पुलिस ने नकारा है। मामले की गंभीरता को देखते हुए एसपी नॉर्थ भी मौके पर पहुंच गए। उनकी समझाइश के बाद ही लोगों का गुस्सा शांत हुआ।

यह है पूरा मामला

पुलिस के अनुसार भारत टॉकीज तिराहे पर मंगलवारा पुलिस थाना, पुलिस कंट्रोल रूम और ट्रैफिक पुलिस का बल तैनात रहता है। बुधवार शाम ट्रैफिक पुलिस ने बाइक सवार को रोककर उससे पूछताछ की। करीब एक घंटे बाद वहां बड़ी संख्या में लोगों की भीड़ जमा हो गई। वे पुलिसकर्मियों पर भड़कते नजर आए। हालांकि पुलिसकर्मी शांति से लोगों को समझाइश देती दिखी, लेकिन लोग वीडियो बनाते रहे। कुछ देर बाद ड्यूटी पर तैनात पुलिस अधिकारी ने लोगों को फटकारते हुए भीड़ को हटाना शुरू कर दिया। इस बीच भीड़ में से भी कुछ लोग नाराज लोगों को शांत रहने के लिए कहते नजर आए। घटना की सूचना मिलते ही आला अधिकारी भी मौके पर पहुंच गए। उन्होंने लोगों को समझाइश दी और लॉकडाउन के नियमों के पालन करने को कहा। हालांकि पुलिस ने बाद में किसी के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की।

कोरोना कर्फ्यू में भी बिगड़ गई हवा

पराली जलाने और ज्यादा दाह संस्कार से शहर में बढ़ा प्रदूषण

भोपाल। कोविड संक्रमण को रोकने के लिए शहर में अप्रैल में कोरोना कर्फ्यू लगाया गया है। उम्मीद थी कि इससे कम से कम शहर की हवा में तो सुधार होगा, लेकिन जब प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (पीसीबी) द्वारा जारी किए गए आंकड़ों पर नजर डाली तो मामला उल्टा ही नजर आया। 27 फरवरी को पीएम (पर्टिकुलेट मैटर) 2.5 और पीएम 10 का औसत 41 और 119 था। वहीं 27 मार्च को बढ़कर 72 और 148 हो गया। 27 अप्रैल को दोनों का औसत क्रमश- 123 और 114 हो गया। पीसीबी के वैज्ञानिकों ने इसके 3 मुख्य कारण बताए हैं, जिसमें पहला शहर के आसपास पराली जलाना, दूसरा ज्यादा मात्रा में दाह संस्कार होना और कोरोना कर्फ्यू में भी वाहनों का लगातार आवागमन होना। पराली जलाने से डस्ट पार्टिकल हवा के जरिए शहर में आ रहे हैं।

एक साथ दो अदालतों में दलील दे रहा था वकील; टोका तो बोला- मुझे कुछ कह रहे हैं, सीजेआई बोले- नहीं दीवार से

नई दिल्ली, एजेंसी। अक्सर वकील एक कोर्ट में केस निपटाकर दूसरी कोर्ट में जिरह करने जाते हैं। लेकिन वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से सुनवाई के दौरान ऐसा करना मुश्किल हो जाता है, क्योंकि इसमें अक्सर एक ही समय में अलग-अलग कोर्ट में एक साथ सुनवाई चलती है। ऐसा ही एक वाक्या गुरुवार को हुआ। एक वकील ने डिजिटल मोड में भी पुराना फार्मुला अपनाया, पर विफल रहा।

एक वकील को दो अलग-अलग मामलों में पेश होना था। एक केस सीजेआई एनवी रमना की कोर्ट में, दूसरा अन्य बेंच में था। वकील ने सामने दो कम्प्यूटर लगा रखे थे, जिनके जरिए वह दोनों कोर्ट से जुड़ा था। जैसे ही सीजेआई कोर्ट में सुनवाई शुरू हुई तो वकील उस समय दूसरी बेंच के सामने दलीलें दे रहे था। वकील ने सीजेआई बेंच के सामने खुद को म्यूट नहीं किया इसलिए दूसरी बेंच में दी जा रही दलीलें सीजेआई की बेंच में भी सुनाई दे रही थीं। जबकि सीजेआई की बेंच के सामने मामले से जुड़ा वकील दलीलें पहले से ही दे रहा था। इससे एक साथ सीजेआई को दोनों वकीलों की दलीलें सुनाई देने लगीं। फिर सीजेआई बोले- अगर आप दोनों एक साथ दलीलें देकर आपस में चर्चा करना चाहते हैं, तो कोर्ट से बाहर हो जाएं। फिर भी एक वकील ने दलीलें जारी रखीं। सीजेआई नाराज होकर बोले- आप हमारे सामने अन्य मामले में दलीलें दे रहे हैं। यह अनुशासनहीनता है। तभी वकील का ध्यान सीजेआई की ओर गया और उन्होंने पूछा- माई लॉर्ड आप मुझे कुछ कह रहे हैं? सीजेआई ने गुस्से में कहा- नहीं, हम तो दीवार से बात कर रहे हैं। सीजेआई रमना की अध्यक्षता वाली पीठ ने गुरूवार को दो अलग-अलग मामलों में आदेश जारी करने से मना कर दिया। दोनों मामलों में निचली अदालत को केस का ट्रायल जल्द निपटाने के लिए निर्देश जारी करने की मांग की गई थी। सीजेआई ने कहा कि मौजूदा कोराना महामारी के समय में जिस प्रकार के हालात हैं, उनमें हम निचली अदालतों को इस प्रकार के आदेश जारी नहीं कर सकते। राष्ट्र संकट का काल चल रहा है। न्यायपालिका भी चुनौतियों से जूझ रही है।

शाही इमाम सय्यद अहमद बुखारी की अपील, लोग जरूर लगवाएं टीका

नई दिल्ली, एजेंसी। देश में कोरोना संक्रमण तेजी से फैल रहा है। ऐसे में सरकार की ओर से सभी को वैक्सीन लगवाने के लिए जागरूक करने के साथ ही अपील की जा रही है कि लोग जल्द से जल्द टीकाकरण कराएं। वहीं, रमजान के चलते मुस्लिम समुदाय में भ्रम की स्थिति बनी हुई है। कुछ लोग टीकाकरण करवाने से बच रहे हैं कि कहीं रोजा न टूट जाए। ऐसे में देश के जाने माने इस्लामिक विद्वान और उलमा ने समुदाय के लोगों से अपील की है कि वे मौका मिलते ही वैक्सीन लगवा लें। यही रक्षा कवच उन्हें कोरोना महामारी से बचाने में सक्षम होगा। दिल्ली में जामा मस्जिद के शाही इमाम सय्यद अहमद बुखारी ने कहा कि जिस तरह देश में महामारी तेजी से फैल रही है और इससे सबसे ज्यादा मुंबई और दिल्ली प्रभावित हैं। ऐसे में डाक्टरों और वैज्ञानिकों की सलाह है कि अब वैक्सीन लगवा लेनी चाहिए। इस तथ्य के बावजूद कि टीका लगाए जाने के बाद लोगों को कुछ परेशानी होने की खबरें हैं। लेकिन ज्यादातर डाक्टरों का कहना है कि टीका लगाने के बाद कोरोना संक्रमण से पहले जितना जोखिम नहीं रहता।

जेलों में तेजी से पैर पसार रहा कोरोना, दो दिनों में 3 कैदियों की मौत से प्रशासन चिंतित

नई दिल्ली। दिल्ली के जेलों में तेजी से पैर पसार रहे कोरोना वायरस की चपेट में आने से बृहस्पतिवार को एक महिला सहित दो कैदियों की मौत हो गई। महिला कैदी तिहाड़ के जेल संख्या छह में वहीं दूसरा कैदी जेल संख्या तीन में बंद था। दोनों कैदी पूर्वी दिल्ली स्थित जीटीबी अस्पताल में भर्ती थे। जेल प्रशासन के मुताबिक जिन कैदियों की मौत बृहस्पतिवार को हुई है उनके संक्रमण का पता इसी महीने चला था। पुरुष कैदी के संक्रमण की जानकारी 16 अप्रैल वहीं महिला कैदी के संकमण की जानकारी 17 अप्रैल को सामने आई थी। इसके पहले बुधवार को जेल संख्या सात में बंद एक कैदी की मौत संक्रमण से हो चुकी है। जिस विचाराधीन कैदी की बुधवार को मौत हुई थी वह जेल संख्या सात में बंद था। 22 अप्रैल को उसकी तबीयत खराब होने पर उसकी कोरोना जांच कराई गई। रिपोर्ट पाजिटिव उसे पूर्वी दिल्ली स्थित जीटीबी अस्पताल में भर्ती कराया गया था। इसके पहले भी एक कैदी की मौत इस वर्ष संक्रमण से हो चुकी हैं। जेल प्रशासन का कहना है कि इस वर्ष कोरोना से अब तक चार कैदियों की मौत हो चुकी है। तिहाड़ की महिला जेल में एक साथ बड़ी तादाद में कैदियों के संक्रमण का पता चलने के बाद अब एक कैदी की मौत ने प्रशासन के माथे पर चिंता की लकीरें खींच दी है। महिला जेल में सभी कैदियों के बीच शारीरिक दूरी को लेकर विशेष सतर्कता बरती जा रही है। जेल प्रशासन के लिए इस जेल में यह कार्य अन्य जेलों के मुकाबले आसान है, क्योंकि इस जेल में क्षमता से अधिक कैदियों की समस्या नहीं है। पूरे जेल परिसर को समय-समय पर सैनिटाइज कराया जा रहा है। जेल प्रशासन के मुताबिक जिन कैदियों की मौत बृहस्पतिवार को हुई है उनके संक्रमण का पता इसी महीने चला था। पुरुष कैदी के संक्रमण की जानकारी 16 अप्रैल वहीं महिला कैदी के संकमण की जानकारी 17 अप्रैल को सामने आई थी। फिलहाल दिल्ली के सभी जेलों में कुल 266 कैदी संक्रमित हैं। वहीं कर्मचारियों की बात करें तो 117 संक्रमित हैं।

पश्चिम विहार में चल रहा था हुक्का बार, 17 लोग पकड़े गए

नई दिल्ली , एजेंसी। पश्चिम विहार वेस्ट इलाके में लॉक डाउन के वक्त भी लोग कानून को अपने हाथ में लेने से नहीं डर रहे। एक बेसमेंट में खुलेआम हुक्का बार चल रहा था, जहां पुलिस ने छापा मार 17 लोगों को पकड़ा। इनमें 14 ग्राहकों के अलावा दो कर्मचारी और मालिक शामिल है। यहां न तो किसी ने मास्क लगा रखा था और न कोई सामाजिक दूरी का पालन कर रहा था। इस मामले में पुलिस ने हुक्का बार मालिक सुमित गुप्ता के खिलाफ मामला दर्ज कर उसे गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने बताया नांगलोई रोड, भेरा एंक्लेव, पश्चिम विहार इलाके में गुप्ता प्रॉपर्टीज के दफ्तर में हुक्का बार चलने की सूचना मिली। पुलिस ने रेड डाली तो पाया हुक्का बार में मस्ती चल रही थी। नौजवान हुक्का पीने में व्यस्त थे। हुक्का बार मालिक सुमित गुप्ता वहीं ?था। पुलिस ने आरोपी निहाल विहार निवासी को अरेस्ट कर लिया। उसके खिलाफ पश्चिम विहार वेस्ट थाने में सरकारी आदेश के उल्लंघ, महामारी अधिनियम, समेत कई अन्य धाराओं में मामला दर्ज किया गया। पुलिस ने हुक्का बार से पांच हुक्के, नौ कॉयल, नौ फ्लेवर पैकेट और अन्य सामान बरामद किए। पुलिस पकड़े गए लोगों से पूछताछ कर रही है।

गृह मंत्रालय ने राज्यों को एडवाइजरी भेजी, 10% से ज्यादा संक्रमण वाले जिले पहचानें

नई दिल्ली , एजेंसी। देश में कोरोना के बढ़ते मामलों को देखते हुए केंद्रीय गृह मंत्रालय ने राज्यों को एडवाइज़री जारी की है। इसमें राज्यों से उन जिलों की पहचान करने को कहा गया है, जहां संक्रमण दर 10त्न से ज्यादा है या जहां अस्पतालों में 60त्न से ज्यादा बिस्तर भर चुके हैं। ज्यादा संक्रमण वाले इलाकों में निगरानी बढ़ाने और नियंत्रण के उपायों पर विचार करने के लिए कहा गया है। इसमें लॉकडाउन का कोई जिक्र नहीं किया गया है। राज्यों से कहा गया है कि वे पर्याप्त ऑक्सीजन वाले बेड, आईसीयू बेड, वेंटिलेटर, एम्बुलेंस सुनिश्चित करने के लिए जरूरी कदम उठाएं। अस्थाई अस्पतालों का निर्माण करने को भी कहा गया है। गृह मंत्रालय ने स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा 25 अप्रैल को जारी एडवाइजरी में बताए अनुसार रोकथाम के उपायों पर विचार करने के लिए कहा है। स्वास्थ्य सेवा, पुलिस, अग्नि, बैंक, बिजली, पानी और स्वच्छता जैसी आवश्यक सेवाएं और गतिविधियां, सार्वजनिक परिवहन सहित सभी आकस्मिक सेवाएं और इन गतिविधियों के सुचारू संचालन के लिए आवश्यक गतिविधियां।

दिल्ली में दिखने लगी दो सरकार, सियासी रार में टूटने लगे भरोसे के तार

नई दिल्ली , एजेंसी। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली (संशोधन) अधिनियम-2021 लागू हुए अभी दो ही दिन हुए हैं, लेकिन सियासी रार में आपसी भरोसे के तार टूटने लगे हैं। दिल्ली में अब सरकार का मतलब उपराज्यपाल (एलजी) होने के बावजूद आम आदमी पार्टी सरकार अपनी ही राह चल रही है। आलम यह है कि राजनिवास की बैठक में शामिल होने की बजाय सीएम अरविंद केजरीवाल अपनी अलग बैठक कर रहे हैं। इतना ही नहीं टीकाकरण अभियान को लेकर एलजी जो जानकारी मुख्य सचिव से मांग रहे हैं, मुख्यमंत्री उस पर प्रेस विज्ञप्ति जारी कर रहे हैं। दिल्ली की सरकार का दर्जा पाने के बाद उपराज्यपाल अनिल बैजल ने बृहस्पतिवार को सुबह पहली बार एक बैठक बुलाई थी। कोरोना संक्रमण की स्थिति पर आयोजित समीक्षा बैठक में आला अधिकारियों संग मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल, उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया और स्वास्थ्य मंत्री सत्येंद्र जैन को भी शरीक होना था, लेकिन सीएम के शामिल नहीं होने से यह बैठक नहीं हो सकी। उधर,

इसी मुद्दे पर केजरीवाल ने बृहस्पतिवार दोपहर एक अलग बैठक की अधिकारियों को दिशानिर्देश जारी किए।

दूसरा मतभेद तब सामने आया जब बैजल ने मुख्य सचिव विजय देव को शनिवार से शुरू होने वाले 18 वर्ष से अधिक आयु वालों के टीकाकरण अभियान की तैयारियों पर रिपोर्ट देने को कहा। जिस अभियान को लेकर उपराज्यपाल को ही नहीं पता, उसे लेकर तमाम जानकारी मुख्यमंत्री कार्यालय ने प्रेस विज्ञप्ति के जरिये मीडिया में साझा कर दी। दिलचस्प यह भी कि 18 वर्ष से अधिक की आयु वालों को टीका शनिवार से लगना है, लेकिन सरकार इसके लिए तैयार नहीं है। सत्येंद्र जैन जहां साफ कह रहे हैं कि उनके पास इस टीकाकरण अभियान के लिए डोज ही नहीं है वहीं केजरीवाल इस वर्ग को टीका लगाने के लिए तीन माह का समय मांग रहे हैं। उधर, राजनिवास से जुड़े सूत्रों के मुताबिक भले ही छोटे स्तर पर ही सही, डीएम और एसडीएम की मदद से यह अभियान शनिवार से ही शुरू होगा और फिर अगले सप्ताह इसमें तेजी लाई जाएगी।

राजनिवास की ओर से एक ट्वीट कर यह भी साफ किया गया है कि उपराज्यपाल को सरकार के उस आदेश की जानकारी ही नहीं थी जिसके तहत अशोका होटल में जजों के लिए कमरे बुक कराए गए थे। जबकि सत्तारूढ़ पार्टी के एक विधायक राजेश गुप्ता इस आदेश को उपराज्यपाल द्वारा जारी किया हुआ बता रहे थे।

इसी तरह दिल्ली के लिए पिछले सप्ताह आक्सीजन का जो कोटा बढ़ा, वह केंद्र सरकार ने उपराज्यपाल के अनुरोध पर बढ़ाया था जबकि गुरुवार को सिसोदिया केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल को पत्र लिखकर आक्सीजन का कोटा और बढ़ाने की मांग करते दिखे। राजनीतिक जानकारों की मानें तो आने वाले दिनों में यह सियासी रार और बढ़ेगी। आप सरकार जहां एक बार फिर अपने निर्वाचित सरकार होने के दंभ से बाहर आने को तैयार नहीं है वहीं उपराज्यपाल भी अब संवैधानिक शक्तियों का प्रयोग करने को बाध्य होंगे। पांच राज्यों का चुनाव परिणाम आने के बाद इस रस्साकशी में और तेजी आने की संभावना है।

24 घंटे में कोरोना से 702 शवों का किया गया अंतिम संस्कार

नई दिल्ली , एजेंसी। दिल्ली के अलग-अलग इलाकों में 24 घंटों के दौरान कोरोना से मौत के बाद 702 शवों का अंतिम संस्कार किया गया। दिल्ली में पिछले 24 घंटे के दौरान कोरोना से मरने वाले लोगों की 700 से अधिक शवों को दिल्ली के श्मशान घाटों में जलाई गई हैं। दिल्ली में बीते दिनों कुल 702 लोगों के शवों का कोरोना नियमों के तहत अंतिम संस्कार किया गया, जिनमें से दक्षिणी दिल्ली के 329 शव थे, जबकि उत्तरी दिल्ली में 310 और पूर्वी दिल्ली में 63 लाशों का अंतिम संस्कार किया गया है। बता दें कि कोरोना संक्रमण को लेकर दिल्ली के सरकार के स्वास्थ्य विभाग ने मौत के आंकड़ों में हालांकि 24 घंटे के दौरान 368 मौतों की ही जानकारी दी है। राजधानी दिल्ली में कोरोना की वजह से हालात और बिगड़ता नजर आ रहा है। बुधवार को भी दिल्ली में कोरोना के 25986 नए केस सामने आए, जिसके साथ ही संक्रमित मरीजों की संख्या बढ़कर 99752 पर पहुंच गई। स्वास्थ्य विभाग की मेडिकल बुलेटिन के मुताबिक इस समय राजधानी में 53000 से ज्यादा लोग होम-आइसोलेशन में हैं, जबकि 24 घंटों के दौरान 20000 से अधिक लोगों को विभिन्न अस्पतालों से डिस्चार्ज किया गया है।

बिगड़ रहे हालात:भारत में अब बड़े शहरों से छोटे शहरों में तेजी से फैल रहा है कोरोना वायरस

नई दिल्ली , एजेंसी। भारत में कोरोना की दूसरी लहर ने दिल्ली, मुंबई जैसे महानगरों में कहर बरपा रखा है। अस्पतालों में मरीजों को ऑक्सीजन और बेड नहीं मिल रहे हैं। लेकिन अब कोरोना की यह दूसरी लहर देश के उन छोटे कस्बों, शहरों और गांवों में भी पैर पसार रही है, जो पहली लहर के दौरान इससे अछूते थे। सबसे बड़ी परेशानी यह है कि देश के छोटे शहरों में चिकित्सा सुविधाएं सीमित होने के कारण लोग बेहतर इलाज के लिए अपनों लेकर बड़े शहरों की ओर जाने को मजबूर भी हो रहे हैं। आलम ये है कि बीते 24 घंटे में जयपुर के प्राइवेट अस्पतालों में ऑक्सीजन की कमी से 4 मरीजों की मौत हुई है। यूपी के लखनऊ में

ऑक्सीजन के लिए लोग भटक रहे हैं। दिल्ली के सराय काले खां श्मशान घाट के सामने 27 और शवदाह प्लेटफॉर्म बन रहे हैं। विशेषज्ञों के अनुसार यूपी में वायरस का रिप्रोडक्शन नंबर (आर) 2.14, झारखंड में 2.13 और बिहार में 2.09 है। यानी यहां एक व्यक्ति औसतन इतने लोगों को संक्रमित कर रहा है। वायरस कितनी तेजी से फैल रहा है, इसे परखने के लिए आर नंबर का प्रयोग किया जाता है। राजस्थान के कोटा जिले में पिछले हफ्ते 6000 से अधिक मरीज मिले और मौतें करीब 264 हुईं। सर्वाधिक मौतें अप्रैल में हुई हैं। बीते 7 अप्रैल तक नए मामलों दोगुने होने में 72 दिन लगे थे, अब 27 दिन में केस दोगुने हो रहे हैं। अस्पतालों में ऑक्सीजन वाले बेड खाली नहीं हैं। 27 अप्रैल को जिले की 329 आईसीयू यूनिट्स में से केवल दो ही खाली थीं।

प्रयागराज: कोरोना से अप्रैल महीने में ही करीब 32त्न मौतें: यूपी के प्रयागराज जिले में 20 अप्रैल तक कोरोना के 54,339 केस थे, उसके बाद नए केस 21त्न बढ़े। पिछले हफ्ते 11,318 केस मिले, 614 की मौत हुईं। अप्रैल महीने में ही करीब 32त्न मौतें हुई हैं। असल मौतों की संख्या सरकारी रिकॉर्ड से ज्यादा है। सोशल मीडिया पर राज्य के लोग ऑक्सीजन और दवा की कमी पर सवाल उठा रहे हैं। बिहार के भागलपुर जिले में 20 अप्रैल तक नए केस 26त्न बढ़े हैं और 33त्न की मौत हुई है। जहां तक बेड की बात है, तो यहां के जवाहर लाल नेहरू मेडिकल कॉलेज की सभी यूनिट्स 28 अप्रैल तक भर गई थीं। यहां हालत यह कि पिछले 10 दिनों के दौरान यहां के 220 डॉक्टरों में से 40 कोरोना संक्रमित पाए गए और इनमें से भी करीब 4 डॉक्टरों की मौत हो गई है।

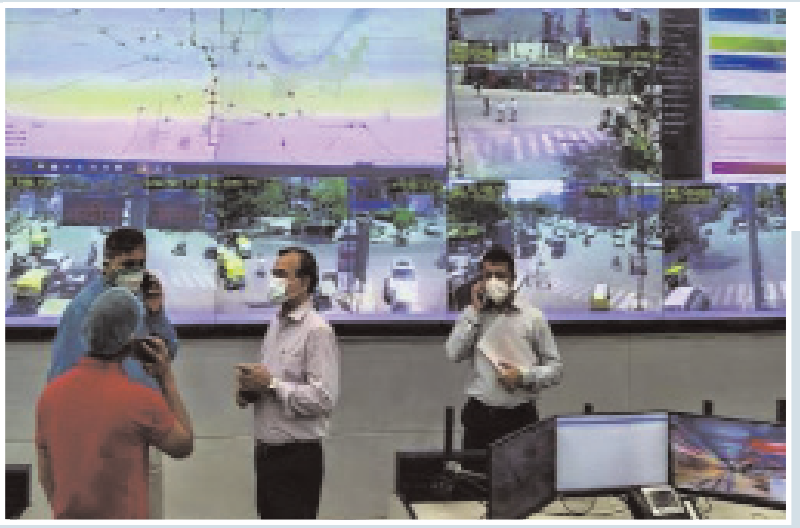

आगरा में किसी को बेड की दरकार तो किसी के लिए वेंटीलेटर का नहीं हो पा रहा इंतजाम

आगरा। शहर में कोविड मरीजों व सामान्य मरीजों को दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। लगातार बढ़ रहे संक्रमण के मामलों के चलते बेड, आक्सीजन, वेंटीलेटर और रेमडेसिविर इंजेक्शन के लिए सिफारिश तक लगवानी पड़ रही हैं लेकिन इसके बाद भी यह उपलब्ध नहीं हो पा रहे हैं। हाल यह है कि सोमवार सुबह कई अस्पतालों ने आक्सीजन जल्द खत्म होने का लेटर वायरल कर दिया। जिला प्रशासन ने नगर निगम स्थित एकीकृत कमांड एंड कंट्रोल सेंटर में कोविड कंट्रोल सेंटर बनाया है। एक फोन पर दवा और इलाज का दावा किया गया था। कंट्रोल सेंटर में कर्मचारियों की तीन शिफ्ट में ड्यूटी लगाई गई है। सुबह से ही फोन आने लगते हैं।

कंट्रोल सेंटर का नहीं उठता फोन- सोमवार को इंटरनेट मीडिया पर सीएमओ कार्यालय और नगर निगम कार्यालय में खुले कंट्रोल सेंटर का फोन न उठने का मैसेज वायरल हुआ। बाग फरजाना निवासी श्याम मोहन का कहना है कि दो बार फोन करने के बाद भी कोई रिस्पांस नहीं मिला। यहां तक वाट्सएप पर मैसेज भी भेजा पर कोई जवाब नहीं मिला।

मवाय में जूडा की हड़ताल

3 महीने से सैलरी नहीं मिलने और अन्य मांगों पर सुनवाई न होने से जूडा डॉक्टर नाराज, कहा- हमें नजरअंदाज किया जा रहा; लामबंद होने का ऐलान

इंदौर। इंदौर के एमवाय अस्पताल में गुरुवार को जूनियर डॉक्टर काम बंद कर हड़ताल पर जा रहे हैं। जूडा डॉक्टर सैलरी और अन्य मांगों पर सुनवाई नहीं होने से नाराज चल रहे हैं। उनका कहना है कि पूरे कोरोना काल में उन्होंने ड्यूटी दी है। शुरुआत में उन्हें कहा गया था कि कोविड ड्यूटी करने पर उनकी सैलरी में 10 हजार रुपए और बढ़ा दिए जाएंगे। लेकिन वो रुपए तो नहीं मिले, ऊपर से तीन महीने की बेसिक सैलरी भी अब तक नहीं मिली। बता दें कि इससे पहले भी मार्च और अप्रैल महीने में जूनियर डॉक्टर हड़ताल पर जा चुके हैं, लेकिन शासन-प्रशासन उनकी सुध नहीं ले रहा है। इससे नाराज जूनियर डॉक्टर ने आज एकबार फिर लामबंद होने का ऐलान किया है।

मांग नहीं मानी गई तो आंदोलन आगे बढ़ेगा

जूडा इंदौर अध्यक्ष डॉ. प्रखर चौधरी ने कहा कि जूनियर डॉक्टरों को मजबूरी में यहां आना पड़ रहा है। हम पिछले एक साल से कोविड काल में काम करते आ रहे हैं। अभी भी कोरोना संक्रमण फैल रहा है, ऐसे में हम अपनी सेवाएं देते रहेंगे। हमारी दिक्कत यह है कि शुरुआत में कोरोना वॉरियर बोलकर हमारा ताली और थाली से सम्मान किया गया, कहा गया कि आपके वेतन में 10 हजार रुपए प्रतिमाह बढ़ोतरी की जाएगी। 10 हजार बढ़ाने की बात तो दूर पिछले तीन महीने से जूनियर डॉक्टरों को बेसिक सैलरी तक नहीं दी गई है। हमारे द्वारा सरकार को दिए गए प्रस्ताव के बाद भी पिछले एक साल से हमारी कोरोना में ड्यूटी लगाई जा रही है।

जबकि हमने पैरामेडिकल स्टॉफ, आयुर्वेदिक, होम्योपैथी डॉक्टर जो सक्षम है, उनकी ड्यूटी लगाने का प्रस्ताव दिया था। इसके बाद भी उनकी भर्ती नहीं की जा रही है। हमसे ही सब काम करवाया जा रहा है। पिछले एक साल से हम लगातार अपनी बात उच्च स्तर पर रखते आ रहे हैं। हम यही कह रहे हैं कि हमारी ड्यूटी कम की जाए, जिससे हम उन मरीजों की भी सहायता का सकें, जो कोविड पेशेंट नहीं हैं। उन्हें बेहतर इलाज मिल सके। जूनियर डॉक्टरों को लगातार नजरअंदाज किया जा रहा है। यदि हमारी मांग नहीं मानी गई तो हम आंदोलन को आगे तक लेकर जाएंगे। हालांकि हम इस प्रकार से आंदोलन को आगे बढ़ाएंगे, जिससे मरीजों को समस्या का सामना नहीं करना पड़े।

खतरे में गर्भवतियों की जिंदगी

अलीगढ़। कोरोना काल में गर्भवती महिलाओं पर आफत आई हुई है। लगता है तंत्र भी कुछ संवेदनशून्य हो गया है। संक्रमित व अन्य गर्भवतियों के सुरक्षित प्रसव के लिए स्वास्थ्य विभाग कितना गंभीर है यह रविवार को दीनदयाल अस्पताल में देखना को मिला। यहां ओपीडी ब्लाक के पास एक गर्भवती महिला अपनी मां के कंधे से लगकर जोर-जोर से रोए जा रही थी। पास ही खड़ा उसका पिता बेबस नजरों से उसे देख रहा था। जब पिता से मामला पूछा तो पता चला कि गर्भवती महिला तो कोरोना संक्रमित है। पिता व गर्भवती महिला ने जो कुछ बताया, उसने फिर सिस्टम पर सवाल खड़े कर दिए।

अस्पतालों में अव्यवस्था

खैर बाइपास के नगला कलार के राजकुमार मेहनत-मजदूरी करके परिवार का गुजर बसर करते हैं। बेटी की शादी बरौली क्षेत्र में की है, जो नौ माह की गर्भवती है। पिछले दिनों वह कोरोना संक्रमित हो गई। जबकि, यह समय प्रसव कराने का था। चार दिन पूर्व उसे दीनदयाल अस्पताल के कोविड वार्ड में भर्ती कर दिया। राजकुमार ने बताया कि बेटी को दो दिन से काफी प्रसव पीड़ा है, मगर स्टाफ न तो प्रसव कराने को तैयार है और न बेटी को डिस्चार्ज करने के लिए। पीड़िता ने बताया कि शनिवार रात प्रसव पीड़ा होने पर स्टाफ नर्स ने उसे एक इंजेक्शन लगाया और फिर डांटते हुए गई कि अब रात को मुझे जगाने की कोशिश मत करना। मुझे गर्भस्त शिशु की ज्यादा चिंता थी। रविवार को पुन- स्टाफ से प्रसव पीड़ा होने की बात बताई, मगर उन्होंने सुनवाई नहीं की। डिस्चार्ज करने से भी इन्कार कर दिया। कहा, जाना है तो भाग जाओ, लेकिन रिपोर्ट दर्ज हो जाएगी। पिता ने कंट्रोल रूम पर फोन करके स्थिति से अवगत कराया, वहां से कोई राहत या आश्वासन की बजाय डांट खाने को मिली। ऐसे में पिता बेटी और उसके गर्भस्थ शिशु की जिंदगी बचाने के लिए बिना डिस्चार्ज के ही निजी अस्पताल ले गया। किसी ने उसे रोकने की कोशिश नहीं की। पता चला कई और गर्भवती भी इसी तरह कोविड लेबर रूम से जा चुकी हैं, जिन्हें स्टाफ ने भगोड़ा घोषित कर दिया है। जबकि, डीएम के साफ आदेश हो गए हैं कि अब महिला अस्पताल में ही सभी के प्रसव होंगे।

कायदे कानून के पेंच फंसे

एक और मामला यहां सामने आया। पला साहिबाबाद के प्रवीन अपनी पत्नी को व्हील चेयर पर दीनदयाल अस्पताल लेकर पहुंचा। उसकी भी तुरंत डिलीवरी होनी थी। यहां पर स्टाफ को कायदे-कानून याद आए। कहा, आपकी पत्नी निगेटिव है। इसकी डिलीवरी महिला अस्पताल में होगी। पति को कोविड लेबर रूम से लौटना पड़ा। उसने बताया कि सुबह भी दीनदयाल अस्पताल आए थे, यहां से जिला अस्पताल भेजा गया। जिला अस्पताल स्टाफ ने महिला अस्पताल जाने को कहा। महिला अस्पताल से फिर दीनदयाल भेज दिया गया। ऐसे हालात में पत्नी का प्रसव कराएं तो कहां।

रातापानी सेंक्चुरी में 3 साल के बाघ की मौत

होशंगाबाद। टाइगर स्टेट के नाम से पहचाने जाने वाले मप्र में इन दिनों टाइगर सुरक्षित नहीं है। बुधवार एक 3 साल के बाघ की मौत हो गई। 2 मई को भी रातापानी सेंक्चुरी में मिडघाट के पास ट्रेन की चपेट में आ जाने से 10 माह के मादा बाघ शावक की जान चली गई थी। बुदनी से सटे जहानपुरा गांव के पास बाघ का शव मिला है। गांव के पास बाघ के शव मिलने से दहशत का माहौल है। सूचना मिलते ही सीहोर जिले के डीएफओ डीएफ रमेश गनावा व बुदनी क्षेत्र का फॉरेस्ट अमला मौके पर पहुंचा। वाइल्ड लाइफ, डॉग स्क्वायड टीम को भी घटनास्थल बुलाया गया। डॉक्टरों की टीम द्वारा पोस्टमार्टम किया गया। बाघ्क के मौत का कारण स्पष्ट नहीं हो पाया है।

जान से खिलवाड़

पानी भरकर टोसिलिजुमैब के इंजेक्शन ढाई-ढाई लाख रुपए में बेचे; इन पैसों से गर्लफ्रेंड को गिफ्ट दिए

इंदौर। कोरोना महामारी में भी कुछ लोग पीड़ितों की मदद की बजाय उनकी जान से खिलवाड़ कर रहे हैं। ऐसे लोग सिर्फ पैसों के लालच में मरीजों की जान जोखिम में डाल रहे हैं। ताजा घटना इंदौर की है। यहां एक आरोपी ने पानी भर कर टोसिलिजुमैब (टोसी) के इंजेक्शन ढाई-ढाई लाख में बेच दिए। उसके पास जैसे-जैसे पैसे आते गए, उसने घर के लिए कूलर, फ्रिज, अलमारी और मोबाइल के साथ सालभर का राशन खरीद लिया। इतना ही नहीं, उसने अपनी गर्लफ्रेंड के लिए हजारों के कपड़े खरीद लिए और कई गिफ्ट भी दिए। लॉकडाउन खुलने के बाद आरोपी अपनी गर्लफ्रेंड को घुमाने ले जाने वाला था। इंदौर पूर्व के स्कआशुतोष बागरी के मुताबिक पानी भरकर टोसिलिजुमैब के इंजेक्शन बेचने के मामले में पकड़ा गए सुरेश यादव (उम्र 29 साल) के खिलाफ राष्ट्रीय सुरक्षा कानून (रासुका) के तहत कार्रवाई की जाएगी। सुरेश ने कबूला है कि वह पांच लोगों को दो से ढाई लाख रुपए में इंजेक्शन बेच चुका है। झढ्ढ तहजीब काजी के मुताबिक सुरेश यादव लक्ष्मणपुरा गली नंबर-3 बाणगंगा में रहता है। एक पीड़ित ने थाने में बताया था कि बदमाश ने उसे टोसी का इंजेक्शन बताकर ढाई लाख रुपए में पानी का इंजेक्शन बेचा है। साथ ही बताया कि आरोपी सोशल मीडिया पर एक्टिव है और उसने मेरा (पीड़ित का) मोबाइल नंबर ब्लॉक कर दिया है।

पुलिस ने इस तरह पकड़ा

स्ढ्ढ प्रियंका शर्मा को सोशल मीडिया ग्रुप इंदौर स्मार्ट सिटी पर टोसी इंजेक्शन की डिमांड डालने के लिए कहा गया, तभी आरोपी ने उनसे चैट की। बताया कि वह इंजेक्शन दे देगा। उसकी असल कीमत 40 हजार है, लेकिन अभी ब्लैक में ढाई लाख रुपए में मिलेगा। ऐसा कहकर आरोपी ने प्रियंका से ढाई लाख रुपए में सौदा कर लिया।

मंगलवार को आरोपी ने प्रियंका को विजय नगर में राधेश्याम पहलवान के घर के पास मिलने के लिए बुलाया। आरोपी ने सब इंस्पेक्टर से यह भी कहा कि रुपए शकर या धान की थैली में लाना। पुलिस पूछे तो बोल देना कि घर के लिए राशन लेने आई थी।आरोपी से सौदा तय होने के बाद थाने के जवान भरत को ऑटो ड्राइवर बनाया और स्ढ्ढ ग्राहक बनकर गईं। मौके पर आरोपी ने रुपए की थैली लेकर प्रियंका से कहा कि जल्दी से चले जाओ नहीं तो पुलिस आ जाएगी। इसी दौरान पुलिस ने उसे पकड़ लिया। आरोपी को यह नहीं मालूम था कि जिसे वह इंजेक्शन दे रहा है वह खुद ही पुलिस स्टाफ है।

सिर्फ महिलाओं को देता था टोसिलिजुमैब इंजेक्शन

ठग इतना शातिर था कि जब उसे इंजेक्शन के लिए मैसेज आते थे तो वह पहले यह पता कर लेता था कि जिसे इंजेक्शन चाहिए है वह महिला है या पुरुष। इसके बाद उससे वह सौदा तय करता था। वह पुरुषों को बड़ी मुश्किल से इंजेक्शन देता था, जबकि लड़कियों को आसानी से बेच देता था।

एक महिला को इंजेक्शन की जगह वैसलीन की डिब्बी थमा दी

पुलिस के मुताबिक आरोपी सुरेश से जिन लोगों ने इंजेक्शन खरीदे, उनसे पुलिस ने संपर्क कर लिया है। आरोपी ने किसी को भी असली इंजेक्शन नहीं दिया है। सभी ग्राहकों ने पुलिस से शिकायत करने से मना कर दिया है। उनका कहा है कि वे ठगे जा चुके हैं, लेकिन अभी परेशान हैं। पुलिस खुद कार्रवाई कर आरोपी से पैसे दिलवाए। आरोपी ने देवास की एक महिला को इंजेक्शन के बदले वैसलीन की डिब्बी थमा दी थी। उसी महिला की शिकायत पर पुलिस ने कार्रवाई की है।

संपादकीय

रेमडेसिविर इंजेक्शन की खुराकें मुफ्त बांटने की घोषणा की

गुजरात के सूरत में भाजपा के अध्यक्ष ने खुद रेमडेसिविर इंजेक्शन की पांच हजार खुराकें मुफ्त बांटने की घोषणा की। सवाल है कि जिस समय इस इंजेक्शन की किल्लत है, इसकी कालाबाजारी हो रही है, वैसे में भाजपा अध्यक्ष को मुफ्त में बांटने के लिए इतनी बड़ी तादाद में यह कैसे मिली ! देश के ज्यादातर राज्यों में कोरोना के संक्रमण की बिगड़ती स्थिति के बीच इसकी चपेट में आने वाले लोगों और उनके परिवारों की क्या हालत होगी, यह समझना मुश्किल नहीं है। सरकारों की ओर से हर संभव व्यवस्था करने का दावा किया जा रहा है। ऐसी खबरें भी आ रही हैं कि मदद के लिए कई लोग निजी स्तर पर अपने संसाधनों और सीमाओं के साथ काम कर रहे हैं।

लेकिन ऐसे समय में भी कई लोग संवेदनहीन होकर कोरोना के इलाज से संबंधित दवाएं, इंजेक्शन और ऑक्सीजन सिलेंडर की कालाबाजारी कर रहे हैं। दूसरी ओर ऐसे मामले भी सामने आए, जिनमें कुछ लोगों ने कहीं रेमडेसिविर इंजेक्शन और यहां तक कि टीके चुरा लिए तो कहीं ऑक्सीजन सिलेंडरों की लूट हुई। फिलहाल दुनिया के साथ-साथ हमारा देश ऐसे संकट और चुनौती से भरे वक्त से गुजर रहा है, जिसमें बहुत सारे लोगों के सामने जीवन को किसी तरह सुरक्षित रखना या बचाना ही सबसे बड़ी प्राथमिकता हो गई है। महामारी के संक्रमण का स्वरूप ऐसा है, जिसकी चपेट में कोई भी आ सकता है, इसलिए सबके भीतर एक तरह का खौफ भर गया है।

हालांकि सरकार और संबंधित महकमों की ओर से यह आश्वासन जरूर दिया जा रहा है कि लोग धीरज न खोएं और दवा या इंजेक्शन की जमाखोरी या कालाबाजारी न करें, लेकिन चारों तरफ से जिस तरह की खबरें आ रही हैं, उसमें जीवन बचाने की भूख में लोग कई बार जरूरत से ज्यादा परेशान हो रहे हैं। हालत यह है कि हरियाणा में जींद के एक अस्पताल से टीके की सत्रह सौ से ज्यादा खुराकें चोरी हो गईं। इसी तरह मध्य प्रदेश के दमोह से ऑक्सीजन सिलेंडर तो शाजापुर से रेमडेसिविर की लूट की घटनाएं सामने आईं। इंदौर और भोपाल के अस्पतालों से काफी संख्या में रेमडेसिविर इंजेक्शन चोरी हो गए। ये घटनाएं इलाज के लिए उपयोगी इन संसाधनों की कालाबाजारी के अलावा हैं। विडंबना यह है कि संकट के समय में इस तरह की अवांछित गतिविधियों में कुछ नेता भी शामिल पाए जा रहे हैं। इंदौर में भाजपा के एक नेता पर रेमडेसिविर की कालाबाजारी का आरोप है।

गुजरात के सूरत में भाजपा के अध्यक्ष ने खुद रेमडेसिविर इंजेक्शन की पांच हजार खुराकें मुफ्त बांटने की घोषणा की। सवाल है कि जिस समय इस इंजेक्शन की किल्लत है, इसकी कालाबाजारी हो रही है, वैसे में भाजपा अध्यक्ष को मुफ्त में बांटने के लिए इतनी बड़ी तादाद में यह कैसे मिली! दरअसल, समय पर सही जानकारी प्रसारित नहीं होने से ऐसी स्थितियां कई बार अराजकता में तब्दील हो जाती हैं। इसका फायदा कालाबाजारी करने या प्रचार हासिल करने वाले तत्त्व उठाते हैं। कोरोना विषाणु से बीमार हुए लोगों के इलाज के लिए अब तक अंतिम तौर पर कोई कारगर दवा सामने नहीं आ सकी है। रेमडेसिविर सहित जितनी भी दवाएं हैं, उनकी उपयोगिता फिलहाल सीमित ही है। लेकिन परेशान लोगों के बीच किसी खास दवा पर जोर देना कई बार स्थितियों को बेकाबू बना देता है। रेमडेसिविर को लेकर बुधवार को तीन प्रतिष्ठित डॉक्टरों की ओर से यह कहा गया कि इसे जादू की गोली न समझा जाए और लोग परेशान नहीं हों। अगर यही बात कुछ समय पहले सरकार की ओर से कही जाती तो लोग शायद इस कदर धीरज नहीं खोते।

देर से मदद के लिए आया अमेरिका

इस संकट पर अमेरिका की चुप्पी सबको हैरान कर रही थी जबकि भारत अमेरिका का रणनीतिक साझेदार है। यहां तक कि अमेरिका ने भारत में वैक्सीन निर्माण के लिए कच्चे माल की आपूर्ति करने से भी इनकार कर दिया था। रविवार को अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन ने कहा कि भारत में फैले व्यापक कोरोना संक्रमण के इस दौर में हम और मजबूती से भारत के साथ खड़े हैं। हम इस मामले में अपने साझेदार भारत सरकार के साथ मिलकर काम कर रहे हैं। हम जल्द ही भारत के लोगों और भारतीय हेल्थकेयर हीरो के लिए अतिरिक्त सहायता मुहैया कराएंगे। अमेरिकी राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार जेक सुलिवन ने भी कहा कि भारत में कोरोना संकट को लेकर अमेरिका बहुत चिंतित है।

विनीत चतुर्वेदी

इस समय देश कोरोना महामारी विकट दौर से गुजर रहा है। देश के हर हिस्से से से रोजाना दिल दहलाने वाली खबरें सामने आ रही हैं। कोरोना संक्रमण के मरीजों की संख्या रोज बढ़ रही है। ऑक्सीजन की कमी और कोरोना से होने वाली मौतें दिल को दहला दे रही हैं। संकट की इस घड़ी में सिंगापुर, सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात जैसे देश मदद के लिए आगे आए हैं।

लेकिन इस संकट पर अमेरिका की चुप्पी सबको हैरान कर रही थी जबकि भारत अमेरिका का रणनीतिक साझेदार है। यहां तक कि अमेरिका ने भारत में वैक्सीन निर्माण के लिए कच्चे माल की आपूर्ति करने से भी इनकार कर दिया था। रविवार को अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन ने कहा कि भारत में फैले व्यापक कोरोना संक्रमण के इस दौर में हम और मजबूती से भारत के साथ खड़े हैं। हम इस मामले में अपने साझेदार भारत सरकार के साथ मिलकर काम कर रहे हैं। हम जल्द ही भारत के लोगों और भारतीय हेल्थकेयर हीरो के लिए अतिरिक्त सहायता मुहैया कराएंगे। अमेरिकी राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार जेक सुलिवन ने भी कहा कि भारत में कोरोना संकट को लेकर अमेरिका बहुत चिंतित है। हम अपने दोस्त और सहयोगी भारत की मदद की दिशा में काम कर रहे हैं जिससे वे इस महामारी का मुकाबला बहादुरी से कर सकेंगे।

अमेरिका के दो शीर्ष अधिकारियों के बयान के बाद उम्मीद जताई जा रही है कि बाइडेन प्रशासन कोरोना वैक्सीन कोविशील्ड के निर्माण में इस्तेमाल होने वाले कच्चे माल के निर्यात पर लगा प्रतिबंध हटा सकता है। इसके पहले भारत के राजनयिक हलकों से भी इस आशय का अनुरोध किया गया था। भारतीय विदेश मंत्री एस जयशंकर ने अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन के साथ वैक्सीन के कच्चे माल को लेकर बातचीत की थी।

इससे पहले अमेरिका ने कोरोना के टीके के प्रमुख कच्चे माल के निर्यात पर प्रतिबंध लगा रखा था। इससे भारत में सीरम इंस्टीट्यूट के टीके कोविशील्ड के निर्माण की रफ्तार धीमी पड़ने की आशंका जताई जा रही थी। सीरम इंस्टिट्यूट ऑफ इंडिया के सीईओ अदार पूनावाला ने ट्वीट कर अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन से कच्चे माल के निर्यात के नियमों में ढील देने का अनुरोध किया था ताकि भारत की जरूरतों को पूरा किया जा सके।

लेकिन अमेरिकी ने टीका निर्माण के कच्चे माल से निर्यात प्रतिबंध हटाने से साफ इनकार कर दिया था। अमेरिकी विदेश विभाग के प्रवक्ता के प्रवक्ता नेड प्राइस ने कहा कि बाइडेन प्रशासन का पहला दायित्व अमेरिका के लोगों की जरूरतों का ध्यान रखना है। अभी अमेरिका अपने लोगों के महत्वाकांक्षी टीकाकरण के काम में लगा है। हमारी अमेरिकी लोगों के प्रति विशेष जवाबदेही है। जहां तक बाकी दुनिया की बात है, हम पहले अपना दायित्व को पूरा करने के साथ जो कुछ भी कर सकेंगे, वह करेंगे।

हालांकि अमेरिका की इस दलील में दम नहीं है कि उसे

पहले अपने लोगों को वैक्सीन लगानी है। अमेरिका के पास टीके की जरूरत से ज्यादा अतिरिक्त खुराक हैं जिनका इस्तेमाल कभी नहीं किया जाना है। अमेरिका ने एस्ट्राजेनेका और जॉनसन एंड जॉनसन की वैक्सीन भी खरीद रखी हैं। इनमें से एस्ट्राजेनेका जो भारत में कोविशील्ड के नाम जानी जाती है, उसका अमेरिका ने इस्तेमाल ना करने का निर्णय किया है।

अमेरिका में टीकाकरण तेजी से चल रहा है और वहां चार जुलाई तक पूरी आबादी को टीका लगाने का काम पूरा हो जाएगा। यही स्थिति यूरोप के कई अन्य देशों की है। रिपोर्टों के अनुसार ब्रिटेन ने अपनी आबादी से लगभग चार गुना अधिक टीके की खुराक खरीद रखी हैं।

कहा जा रहा है कि ट्रंप के जाने के बाद बाइडन के नेतृत्व में असली अमेरिका की वापसी हुई है। आशय यह है कि अमेरिका अब अपने रंग में वापस आ गया है। उसको केवल अमेरिकी लोगों से मतलब है, दुनिया के जीने मरने से कोई लेना देना नहीं है। जबकि भारत में पिछले दो दशकों से भारत- अमेरिका मैत्री के तराने गाए जाते रहे हैं। भारत ने अपने पुराने मित्र रूस से हाथ खींचकर अमेरिका से हाथ मिलाकर कूटनीतिक दृष्टि से बड़ा परिवर्तन किया था।

तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के जमाने में अमेरिका के साथ परमाणु समझौता हुआ और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दौर में यह रिश्ता और परवान चढ़ा। इसमें तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप की भारत यात्रा और उनका भव्य स्वागत शामिल है। और तो और जब कोरोना की पहली लहर आयी थी, तो उस दौरान हाइड्रो क्लोरोक्वीन इसके इलाज में कारगर मानी जा रही थी। भारत ने इसके निर्यात पर प्रतिबंध लगा रखा था ताकि देश में इसकी कमी ना होने पाए। लेकिन तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अमेरिका को इसकी आपूर्ति का अनुरोध किया। भारत ने निर्यात पर से रोक हटाकर अमेरिका को इसकी आपात आपूर्ति की थी। जहां तक भारत-अमेरिका के रिश्तों की बात है, तो भारत चार देशों के विशेष समूह क्वाड का सदस्य भी है जिसका पहला शिखर सम्मेलन एक महीने पहले मार्च में हुआ था।

कोरोना वायरस संक्रमण के बीच वर्चुअल तरीके से आयोजित क्वाड की इस बैठक में भारत की ओर से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडेन, ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री स्कॉट मॉरिसन और जापान के प्रधानमंत्री योशिहिदे सुगा शामिल हुए थे। द क्वाड्रीलेटरल सिक्योरिटी डायलॉग यानी क्वाड अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया और भारत के बीच कूटनीतिक बातचीत का महत्वपूर्ण फोरम है।

अमेरिका की पहल पर मार्च में इसकी बैठक हुई थी और इसका मकसद चीन के बढ़ते प्रभाव को रोकना है। अमेरिका चीन को गंभीर चुनौती मानता है और भारत उसके प्रभाव को रोकने की महत्वपूर्ण कड़ी माना जाता है। हाल में अमेरिका ने जलवायु परिवर्तन को लेकर एक अहम वर्चुअल सम्मेलन किया। इसके लिये अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन के विशेष दूत जॉन केरी भारत आये थे और उन्होंने अमेरिका-भारत संबंधों के तराने गाये और कहा कि जलवायु परिवर्तन के खिलाफ लड़ाई में भारत की अहम भूमिका है।

जान कैरी ने कहा कि कोरोना महामारी के दौरान भारत ने वैक्सीन तैयार की और उसे दूसरे देशों तक भी पहुंचाया जिसकी तारीफ की जानी जानी चाहिए। पुरानी कहावत है कि सच्चे मित्र की पहचान विपत्ति के समय ही होती है। जो मित्र दुख की घड़ी में आपसे दूर हो जाता है, वह आपका सच्चा मित्र नहीं है। गोस्वामी तुलसीदास ने मित्र की पहचान बताई है- जे न मित्र दुख होहिं दुखारी, तिन्हहि बिलोकत पातक भारी, निज दुख गिरि सम रज करि जाना, मित्रक दुख रज मेरु समाना। जो लोग मित्र के दुख से दुखी नहीं होते, उन्हें देखने से ही बड़ा पाप लगता है। अपने पर्वत के समान दुख को धूल के समान और मित्र के धूल के समान दुख को सुमेरु (पर्वत) के समान जाने, वही मित्र है।

जीवन के लिए जरूरी है टीका

निशांत कुमरे

टीका आधुनिक चिकित्सा विज्ञान की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक है। टीकाकरण के कारण छोटी उम्र में होनेवाली बीमारियों एवं मृत्युदर में काफी कमी आयी है। कोरोना महामारी हमें बीमारियों से उत्पन्न उस भयावह स्थिति की याद दिलाती है, जिसे हम रोक नहीं सकते। लेकिन यह भी सच है कि कोविड टीका के कारण ही इस महामारी को समाप्त करने और जीवन के पुनर्निर्माण का एक तरीका अब हमारे पास उपलब्ध है। कोरोना महामारी आने के बाद से सरकार ने संसाधनों का उपयोग आपातस्थिति से निपटने के लिए किया है, ताकि सभी के पास मास्क, सेनेटाइजर, साबुन और टीके की सेवा उपलब्ध हो।

हालांकि, सारे संसाधनों का रुख एक तरफ होने के कारण निवारणीय रोगों से बच्चों को बचानेवाला नियमित टीकाकरण कार्यक्रम प्रभावित हुआ है। डब्ल्यूएचओ के अनुसार, एक वर्ष से कम उम्र के लगभग 80 करोड़ बच्चे ऐसी बीमारियों से जूझ रहे हैं, जिससे उनका बचाव किया जा सकता है। हमारा राष्ट्रीय टीकाकरण कार्यक्रम 26 करोड़ से अधिक बच्चों एवं 29 करोड़ गर्भवती महिलाओं को कवर करता है। भारत ने 2014 में सामुदायिक जागरूकता, डोर-टू-डोर अभियानों एवं निगरानी कार्यक्रमों के माध्यम से 90 प्रतिशत बच्चों के टीकाकरण का लक्ष्य निर्धारित किया था।

कार्यक्रम में बाधा बच्चों, अजन्मे बच्चों एवं गर्भवती माताओं के स्वास्थ्य को गंभीर रूप से प्रभावित करता है। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अनुसार केवल मार्च, 2020 में ही एक लाख बच्चों को बीसीजी का डोज नहीं मिल पाया। लगभग दो लाख बच्चों को पैंटावैलेंट (डिप्थीरिया, टेटनस, काली खांसी, हेपेटाइटिस-बी और हिमोफिलस इन्फ्लुएंजा टाइप बी) टीके की खुराक नहीं मिल पाय।

झारखंड सरकार और यूनिसेफ ने कोरोना महामारी के नियंत्रण तथा नियमित टीकाकरण बहाली हेतु कई उपाय किये हैं, जैसे कि सभी सेवा प्रदाताओं को प्रशिक्षित किया गया है कि कैसे वे कोविड-19 प्रोटोकॉल का पालन करते हुए जरूरतमंदों को सहायता एवं सहयोग दे सकते हैं। इसी प्रकार, स्वास्थ्यकर्मियों को मनोसामाजिक परामर्श प्रदान किया गया है। राज्य सरकार द्वारा देश के अलग-अलग हिस्सों से लौट रहे प्रवासी श्रमिकों के बच्चों के लिए एक विशेष टीकाकरण अभियान भी शुरू किया गया। राज्य के 11 जिलों में, जहां आंशिक या संयुक्त रूप से बड़े पैमाने पर टीकाकरण सेवा उपलब्ध नहीं थी, वहां मिशन इंद्रधनुष 3.0 के तहत अभियान शुरू किया गया।

वर्तमान में कोविड-19 महामारी के कारण माता-पिता के अंदर टीकाकरण को लेकर शंका पैदा हुई है। कुछ भ्रामक सूचनाओं के कारण बच्चों की जिंदगी को लेकर खतरा पैदा हुआ है। बच्चों के लिए नियमित टीकाकरण जरूरी है और कोविड-19 का प्रकोप याद दिलाता है कि टीके कितने मूल्यवान हैं। टीके की सुरक्षा के बिना, रोग जल्दी और भयानक परिणामों के साथ फैल सकते हैं। उदाहरण के लिए, खसरा एवं अन्य बीमारियां लगातार खतरा बनी हुई हैं। हम भाग्यशाली हैं कि इन बीमारियों से बचाव के लिए हमारे पास टीका उपलब्ध हैं। यह महत्वपूर्ण है कि बच्चों के टीकाकरण को अपडेट रखा जाये, क्योंकि यह उन्हें कई गंभीर बीमारियों से बचाते हैं।

सीखने का दायरा

पारंपरिक तौर पर हमारे परिवार और समाज में बच्चों का पालन-पोषण इस माहौल में होता है कि आमतौर पर उन्हें आज्ञा पालन करने और अपने बड़ों का बोझ ढोने में सक्षम बनाया जाता है और इसी पर हम खुश होते हैं। यों तो इस तौर-तरीके का असर समूचे व्यक्तित्व पर पड़ता है, लेकिन खासतौर पर पढ़ने-लिखने या उनके शिक्षित होने के ढर्रे के सामने सबसे ज्यादा चुनौती होती है। ऐसा इसलिए कि इससे उनके सोचने-समझने और व्यवहार करने का सलीका तय होता है। पढ़ाई-लिखाई में भी जटिल विषयों को लेकर परिवार से लेकर हमारी शिक्षा पद्धति आमतौर पर प्रयोगधर्मी नहीं रहा है। हम अक्सर बच्चों को या तो कम आंकते हैं या सब कुछ बता देने की हमें जल्दी होती है। या फिर हम बड़ों के रूप में शिक्षकों को भी इसी तरह से पढ़ाया गया है और हम उसे महज हस्तांरित करते हैं। पर एक शिक्षक की भूमिका में होने पर कक्षा के बाद हमें बच्चों की प्रतिक्रिया का विश्लेषण करना चाहिए, ताकि आगे की कार्ययोजना उसको ध्यान में रख कर तैयार की जा सके। मुश्किल यह है कि हमें खुद

भी प्रयोग करना सिखाया नहीं जाता। इसी कारण जब हम पढ़ाने की भूमिका में आते हैं तो हम भी वही प्रकिया अपनाने लगते हैं। उदाहरण के तौर पर गणित विषय पर काम के दौरान बच्चे अक्सर यह पूछते हैं कि इसमें क्या करना है, जोड़ना है या घटाना है? बता देने पर कई बच्चे कर भी लेते हैं। बहुत सारे बच्चे हिंदी विषय में भी यही करते हैं। एक और स्थिति भी देखने में आई कि जब उनको कहा जाता हैं कि प्रश्न पढ़ने की कोशिश करो तो वे कोशिश तो करते हैं, पर समझ नहीं पाते हैं।

हेल्थ टिप्सः गले के दर्द और इचींग से राहत देगा गर्म पानी,

■ खराश या हल्की खांसी के अलावा इन चीजों में भी है मददगार

- गले के पिछले हिस्से में सूजन की वजह से गले में खराश या हल्की खांसी हो जाती है। गले में खराश वायरस के कारण भी होती है - जैसे फ्लू या आम सर्दी। यह कुछ दिनों में ठीक भी हो जाती है। गले में संक्रमण बैक्टीरिया के कारण भी होता है, इसके लिए डॉक्टर एंटीबायोटिक देते हैं। गले में खराश कोविड-19 का लक्षण भी है। ऐसे में अगर किसी ने कोविड टेस्ट कराया है तो रिपोर्ट आने तक वह आइसोलेशन में रहकर गले के लिए यह उपाय कर सकता है। ज्यादातर लोगों में हल्के कोरोना वायरस लक्षण होते हैं। यूनिवर्सिटी ऑफ मैरीलैंड ने कोरोना से जुड़े लक्षणों से लड़ने के लिए कुछ घरेलू उपाय बताए हैं।
- बहुत पानी पीजिए, इससे डिहाइड्रेशन से बचेंगे, गला नम रहेगा।
- शहद के साथ गुनगुना पानी, सूप या चाय जैसे पेय पदार्थ ले सकते हैं। गर्म पानी और चाय से श्वास नली गर्म रहेगी। गले और ऊपरी श्वास नली में जमा बलगम भी बाहर आएगा।
- गर्म पानी से स्नान करें। भाप लें इससे गले की खराश कम होगी। सांस लेने में आसानी होगी।
- शराब या कॉफी जैसे किसी भी कैफीन युक्त पेय से बचना चाहिए, इससे डिहाइड्रेशन हो सकता है।
- एक कप पानी में आधा चम्मच नमक डालकर गरारे करें। गले के दर्द और इचींग से राहत मिलेगी। गरारे के दौरान गले के टिश्यू से वायरस को बाहर निकालने में मदद मिलती है।

एंटी वेनम की तर्ज पर बनी एंटी कोरोना दवा 'विनकोव-19' को डीसीजीआई से मिली मंजूरी

नई दिल्ली। कोरोना की लड़ाई में देश आगे बढ़ा है। डीसीजीआई (भारत के औषधि महानियंत्रक) ने एक खास दवा के क्लीनिकल ट्रायल की मंजूरी दी है। यह घोड़े की एंटीबॉडी इंजेक्ट करने से कोरोना मरीज को बचाने में कारगर साबित हो सकती है। 'विनकोव-19' नाम से बनने वाली कोरोना की यह दवा सेल्युलर और आणविक जीव विज्ञान(सीसीएमबी), हैदराबाद यूनिवर्सिटी के सहयोग से जहर की दवा बनाने वाली विन्स बायोटैक बना रही है। रिसर्च पर आधारित इस दवा को क्लीनिकल ट्रायल के बाद इमरजेंसी मंजूरी मिलने की संभावना है। डीसीजीआई से ये अनुमति घोड़ों पर परीक्षण सफल रहने के बाद मिली। भास्कर ने 13 अप्रैल को ही रिसर्च व डीसीजीआई की मंजूरी का खुलासा कर दिया था। सीसीएमबी के डायरेक्टर राकेश मिश्रा के अनुसार क्लीनिकल ट्रायल के लिए डीसीजीआई से मंजूर होने वाली ये पहली कोरोना दवा है।

सेहत के सुझावः घर पर डिटॉक्स वाटर बनाएं तो उसे घंटे में पिएं

गरम पानी के बजाय इन दिनों ट्राय कर सकते हैं हर्ब्स, फल और सब्जियों से बने ड्रिंक्स हमारी लाइफस्टाइल, खानपान की वजह से हमारे शरीर में टॉक्सिस जमा होने लगते हैं और धीरे-धीरे बीमारियां होती हैं इसलिए समय-समय पर डिटॉक्सिफिकेशन करना जरूरी होता है। वैसे तो इसके लिए कई तरीके होते हैं लेकिन सबसे आसान है वाटर डिटॉक्स। लेकिन, शहर के फूड ब्लॉगर और डाइटिशियन का सुझाव है कि अगर आप घर पर ही डिटॉक्स वाटर बना रहे हैं, तो जरूरी है कि 3 से 4 घंटे के अंदर पी लें। फूड ब्लॉगर मुद्रा केसवानी ने कहा कि मुझे हाल ही में कोरोना हुआ था जिसमें इम्युनिटी को बढ़ाने के लिए मैंने तुलसी और बैसिल के पानी का इस्तेमाल किया। इससे इम्यून सिस्टम मजबूत हुआ। ये दोनों ही डिटॉक्स वाटर रूम टेम्प्रेचर पर ही होने चाहिए। जो जल्द ही असरदार होता है। साथ ही, बॉडी को हाइड्रेट और डिटॉक्स रखना जरूरी है। इसके अलावा, नारियल पानी में फ्रूट्स एंड वाटरमेलन जैसी चीजें बॉडी हाइड्रेट करने में काफी मदद करती है।

घर में मौजूद हर हर्बल चीज से बन सकता है सेहत भरा शरबत

पानी, हल्दी और पालक का डिटॉक्स वॉटर

पालक एक बहुत ही बढ़िया डिटॉक्सीफाइंग एजेंट है। पालक को हल्दी के साथ पीस कर स्मूदी बनाएं। एक दिन में एक से दो कप लिया जा सकता है। कोशिश करें, पालक के कुछ पत्ते रोजाना की डाइट में शामिल हों। हल्दी में एंटीसेप्टिक प्रॉपर्टीज होती हैं, पालक इम्यूनिटी बूस्ट करता है।

आम और तुलसी

आम पाचन कोलेस्ट्रॉल को कम और इंसुलिन को सुधार करने में मदद करता है। तुलसी के पत्ते में एंटीऑक्सीडेंट्स होते हैं जिससे कई बीमारियों से बचा जा सकता है।

इम्यूनिटी बूस्टर भी हैं ये डिफ्यूज्ड ड्रिंक्स

एक ऐसी चाय

3-4 लौंग, इलायची, दालचीनी, अदरक, काली मिर्च को पीसकर चाय में उबालें। छानकर ठंडा होने दें। रूम टेम्प्रेचर पर आ जाए तो शहद और नींबू डालकर सर्व करें।हमारी लाइफस्टाइल, खान-पान की वजह से हमारे शरीर में टॉक्सिस जमा होने लगते हैं और धीरे-धीरे कई बीमारियां होती हैं इसलिए समय-समय पर डिटॉक्सीफिकेशन करना जरूरी होता है। वैसे तो इसके कई तरीके होते हैं लेकिन सबसे आसान है वाटर डिटॉक्स। लेकिन, शहर के फूड ब्लॉगर और डाइटिशियन का सुझाव है कि अगर आप घर पर ही डिटॉक्स वाटर बना रहे हैं, तो जरूरी है कि 3 से 4 घंटे के अंदर पी लें।

मिलते हैं विटामिन, मिनरल्स और एंटीऑक्सिडेंट...

डायटीशियन निधी पांडेय ने बताया, ड्रिंक्स में मसालों के साथ शहद और नींबू डालते हैं, जिससे मसालों की गर्म तासीर संतुलित होती है। गुड़ व इमली के जरिए बॉडी में विटामिन, मिनरल्स और एंटीऑक्सिडेंट मिलते हैं। शलजम से इम्युनिटी बूस्ट होती, कफ में काफी आराम मिलता है। इम्युनिटी बूस्टर ड्रिंक्स में हर्ब्स, खट्टे फल डालें। ड्रिंक्स में काला नमक और काली मिर्च जरूर डालें।

आईआईटी-मद्रास की उपलब्धिः पहला थ्रीडी प्रिंटिंग हाउस 5 दिनों में बनकर तैयार

पारंपरिक घर से लागत 30% कम; नई तकनीक से समय की बचत और प्रदूषण में भी कमी आएगी

नई दिल्ली। आईआईटी-मद्रास के पूर्व छात्रों ने थ्रीडी प्रिंटर से महज 5 दिन में सीमेंट कंक्रीट का घर बना दिया। चेन्नई कैंपस में 600 वर्गफीट बिल्ट एरिया के अपने किस्म के पहले एक मंजिला घर को बनाने में लागत भी पारंपरिक निर्माण में लगने वाली लागत से 30त्न कम आई। खास बात यह है कि आइडिया, डिजाइन से लेकर फिनिश्ड घर बनाने तक हर चीज 'मेड इन इंडिया' है। हाउसिंग के क्षेत्र में इसे क्रांतिकारी तकनीक माना जा रहा है। भविष्य में सस्ते व मजबूत घर बनाने के लिए 'बिल्ड' की बजाय 'प्रिंट' शब्द का इस्तेमाल हो सकता है। इसके निर्माण के लिए एक विशाल थ्रीडी प्रिंटर का इस्तेमाल किया गया, जो कंप्यूटराइज्ड थ्री डायमेंशनल डिजाइन फाइल को स्वीकार कर परत दर परत आउटपुट देता है। मैटेरियल के तौर पर इसमें सीमेंट, कंक्रीट के गारे का इस्तेमाल हुआ।

यह तकनीक आईआईटी मद्रास के मैकेनिकल व इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग के तीन पूर्व छात्रों आदित्य वीएस (सीईओ), विद्याशंकर सी (सीओओ) और परिवर्तन रेड्?डी (सीटीओ) के स्टार्टअप टीवास्ता मैन्युफेक्चरिंग सॉल्युशंस ने विकसित की है। इन्होंने घर के अलग-अलग हिस्सों को पहले वर्कशॉप में प्रिंट किया फिर क्रेन के जरिए चेन्नई कैंपस में जोड़ा। 600 वर्गफीट में बने इस घर में एक बेडरूम, हॉल, किचन व अन्य जरूरी हिस्से हैं। टीवास्ता के सीओओ विद्याशंकर ने बताया कि थ्री प्रिंटर से घर बनाने की तकनीक में खाली जमीन मिले तो फाउंडेशन से लेकर हर सुविधा वाला एक हजार वर्ग फीट का घर महज दो से ढाई हफ्ते में ही बन जाएगा। यदि बड़े पैमाने पर एक जैसे घर बनाए जा रहे हों, तो एक घर पांच दिन में बनकर तैयार हो जाएगा। प्रिंट के लिए पसंदीदा डिजाइन भी दे सकते हैं। मैटेरियल भी उपयोगिता के हिसाब से बदला जा सकता है। इस तकनीक से मजदूरों की उत्पादकता बढ़ेगी और प्रदूषण भी कम होगा। केंद्रीय मंत्री निर्मला सीतारमण ने मंगलवार को वर्चुअल तरीके से इसका उद्घाटन करते हुए कहा कि देश को इसी तरह के समाधानों की जरूरत है।

किसान बनीं जूही: फिल्मों से दूर होकर

10 साल से खेती कर रही हैं जूही चावला

पिता के निधन के बाद उनके खरीदे फार्म में उगाती हैं ऑर्गनिक फल-सब्जियां

जूही चावला का जिक्र आते ही उनका खिलखिलाता चेहरा आंखों के सामने आता है। वे आज भले ही फिल्मों में सक्रिय नहीं हैं, मगर इसमें कोई शक नहीं कि उन्होंने बॉलीवुड में एक अलग ही मुकाम हासिल किया है। यूं तो जूही ने अपने करियर में कई तरह के रोल किए, लेकिन उनकी जिंदादिल कॉमेडी को फैन्स आज भी याद करते हैं। कम ही लोग जानते हैं कि जूही फिल्मों से दूर होकर पिछले 10 साल से खेती कर रही हैं। हाल ही में जूही ने अपने फार्महाउस से कुछ तस्वीरें शेयर की हैं जिनमें वह अपने फार्महाउस में बैठी नजर आ रही हैं।जूही ने इन तस्वीरों को शेयर करते हुए कैप्शन में लिखा, वाडा फार्म में मेरा नया ऑफिस! फुली एयरकंडिशंड और ऑक्सीजन से भरपूर। नए काऊशेड, स्टाफ क्वार्टर और फलों के पेड़ लगाने की प्लानिंग करते हुए।

पापा के निधन के बाद खेती कर रहीं जूही

जूही ऑर्गेनिक प्रोडक्ट्स को बढ़ावा दे रही हैं। वे वुमन ऑफ इंडिया ऑर्गेनिक फेस्टिवल के मुंबई संस्करण की ब्रांड एंबेस्डर हैं। जूही बताती हैं, ÷मैं अपने फार्म में सिर्फ ऑर्गेनिक फसलें ही उगाती हूं। वाडा (महाराष्ट्र) स्थित फार्महाउस पर मैं सब कुछ उगाती हूं। मैं एक किसान हूं।÷ ÷मेरे किसान पिता ने 20 एकड़ ज़मीन वाडा में खरीदी थी। मुझे खेती के बारे में कुछ नहीं पता था। जब उन्होंने खेती योग्य जमीन में इन्वेस्ट किया था, तब एक एक्ट्रेस के रूप में मैं काफी व्यस्त थी और मेरे पास इस पर ध्यान देने के लिए समय भी नहीं था। उनकी मृत्यु के बाद मुझे इस पर ध्यान देना पड़ा।÷ ऑर्गेनिक फलों के अलावा, जूही एक अन्य फार्म हाउस में ऑर्गेनिक सब्जियां भी उगाती हैं। ये जगह मांडवा में है। इसे जूही ने खुद खरीदा है। वे बताती हैं, ÷मेरे पास इन्वेस्ट करने के लिए कुछ पैसा था। किसी ने सुझाव दिया कि जमीन में इन्वैस्टमैंट करूं। मैंने मांडवा में 10 एकड़ ज़मीन खरीदी और यहां ऑर्गेनिक सब्जियां उगाती हूं, जो मेरे पति के रेस्टोरेंट के किचन तक पहुंचती हैं।÷

फिल्मों से दूर हैं जूही

जूही का जन्म 13 नवंबर 1967 को अंबाला (हरियाणा) में हुआ था। जूही ने इंडिया के नामी बिजनेसमैन जय मेहता को 1997 में अपना हमसफर बनाया। जय जूही से लगभग सात साल बड़े हैं। शादी के बाद जूही ने फिल्मों से ब्रेक ले लिया और अपने पारिवारिक जीवन में व्यस्त हो गईं। जूही की बेटी का नाम जाह्नवी है, जिसका जन्म 2001 में हुआ। वहीं उनका एक बेटा भी है, जिसका नाम अर्जुन है और उसका जन्म 2003 में हुआ। जूही पिछली बार 2017 में आल्ट बालाजी की एक वेबसीरीज 'द टेस्ट केस' में रक्षा मंत्री की भूमिका में नजर आई थीं।

खतरों के खिलाड़ी-11 : केपटाउन में शूट होगा नया सीजन

निक्की तंबोली, राहुल वैद्य, दिव्यांका त्रिपाठी और अभिनव शुक्ला सहित ये सेलेब्स लेंगे हिस्सा

रियलटी शो खतरों के खिलाड़ी का 11वां सीजन जल्द ही शुरू होने जा रहा है। इस बार इसे केपटाउन में शूट किया जाएगा। शो में हिस्सा लेने वाले 12 सेलेब्स में बिग बॉस-14 के तीन चेहरे भी शामिल हो रहे हैं। जिनमें निक्की तंबोली, राहुल वैद्य और अभिनव शुक्ला का नाम कन्फर्म हुआ है। शो में हिस्सा लेने वाले ये सभी कंटेस्टेंट केपटाउन के लिए रवाना हो रहे हैं।

ये है प्रतिभागियों की पूरी लिस्ट

खतरों के खिलाड़ी में इस बार दिव्यांका त्रिपाठी, अभिनव शुक्ला, राहुल वैद्य, निक्की तंबोली, विशाल आदित्य सिंह, आस्था गिल, महक चहल, अर्जुन बिजलानी, वरुण सूद, अनुष्का सेन, सौरभ राज जैन और सना मकबूल का नाम शामिल है।

कोरोना से एक्ट्रेस का निधन

नहीं रहीं सुशांत सिंह राजपूत स्टारर छिछोरे जैसी फिल्मों में दिखीं अभिलाषा पाटिल, मुंबई में ली अंतिम सांस

सुशांत सिंह राजपूत स्टारर छिछोरे जैसी फिल्मों में नजर आईं एक्ट्रेस अभिलाषा पाटिल का निधन हो गया है। वे कोरोना वायरस से जूझ रही थीं। बुधवार रात उन्होंने अंतिम सांस ली। वे अपने पीछे पति और बेटे को छोड़ गई हैं। अभिलाषा के साथ जी युवा के मराठी सीरियल बाप माणुस में दिखाई दिए अभिनेता संजय कुलकर्णी ने उनके निधन की पुष्टि की।

बनारस से मुंबई लौटते ही हुईं कोविड पॉजिटिव

एक न्यूज वेबसाइट से बातचीत में कुलकर्णी ने कहा, ÷बीती शाम करीब 6 बजे मुझे ज्योति पाटिल का कॉल आया, जिन्होंने हमारे साथ बाप माणुस में काम किया है। उन्होंने बताया कि अभिलाषा की हालत नाजुक है। मैंने सुना है कि वे बनारस गई थीं, जहां उन्होंने बुखार आया और मुंबई वापसी के बाद उनका कोविड टेस्ट पॉजिटिव निकला। कुलकर्णी ने आगे कहा ÷मैंने अभिलाषा से संपर्क करने की कोशिश की। लेकिन उनके दोनों नंबर्स बंद थे। फिर रात करीब 8ः30 बजे बाप माणुस में हमारे बेटे का रोल करने वाले अभिनेता आनंद प्रभु ने उनके निधन की जानकारी दी।

अदनान सामी ने वैक्सीनेश के लिए लोगों को किया मोटिवेट

अदनान सामी ने आज कोविड 19 टीका लगवाया। गायक ने लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए सोशल मीडिया पर कहा कि यह कोविड 19 महामारी की चल रही दूसरी लहर के बीच खुद को सुरक्षित करने का एकमात्र तरीका है। इंस्टाग्राम पर अपने टीकाकरण प्रक्रिया की एक तस्वीर साझा करते हुए, गायक ने लिखा, इस घातक महामारी से हम खुद को सुरक्षित रख सकते है। मैंने खुद को टीका लगाया है। यह बहुत ही सुरक्षित है जाओ और आप सब भी लगवाओ। टीके के बारे में गलत कहानियां मत सुनो। सभी टीके सुरक्षा के लिए अच्छे हैं। उन्होंने आगे सुझाव दिया, विमान और कारें दुर्घटनाग्रस्त हो जाती हैं, लेकिन क्या आप उड़ना या गाड़ी चलाना बंद कर देते हैं? इसके अलावा, सीधे शब्दों में कहें तो टीका मृत्यु से हमारी सुरक्षा है! जीवन चुनें!

ऑडिशन से पहले ही कास्टिंग डायरेक्टर ने मुझे रिजेक्ट कर दिया था : साहिल उप्पल

अभिनेता साहिल उप्पल आज टेलीविजन इंडस्ट्री में एक जाना माना नाम हैं लेकिन अभिनेता का कहना है कि उन्होंने काफी संघर्ष के बाद ये मुकाम पाया है। साहिल का कहना है कि शुरू में उसके लिए सफलता पाना कठिन था और अक्सर ऑडिशन देने से पहले ही कई बार कास्टिंग डायरेक्टर्स द्वारा उन्हें ठुकरा दिया जाता था। उन्होंने बताया, अस्वीकारों और निराशाओं के नाम पर बहुत संघर्ष था। मैं एक शर्मीला युवा था जो अभिनेता बनना चाहता था, लेकिन उद्योग में कोई पृष्ठभूमि नहीं थी और कला के बारे में ज्ञान नहीं था। कास्टिंग निर्देशक ने ऑडिशन को देखने से पहले ही टिप्पणी की तुम फिट नहीं होते हो। साहिल कहते हैं कि, हालांकि उन दिनों ने बहुत कुछ सिखाया है। वह वर्तमान में साहिल पिंजरा खूबसूरती का में ओंकार की भूमिका निभा रहे हैं।

एसबीआई ने फिर घटाया होम लोन पर ब्याज: मिलता रहेगा होम लोन

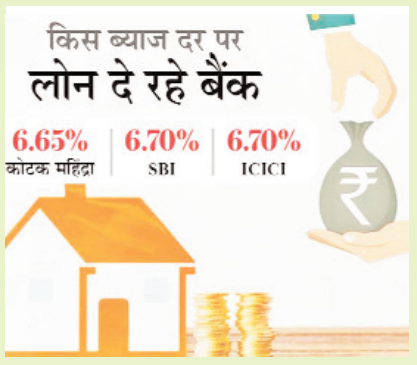

मुंबई, एजेंसी। देश के सबसे बड़े बैंक भारतीय स्टेट बैंक ने होम लोन पर ब्याज की दरें फिर घटा दी हैं। 30 लाख रुपए तक का होम लोन अब 6.70 प्रतिशत ब्याज की दर से मिलेगा। अगर होम लोन 30 लाख से ज्यादा है को फिर आपको 6.95 प्रतिशत की दर से ब्याज चुकाना होगा। बैंक ने शनिवार को यह जानकारी दी। बैंक ने कहा कि 6.95 प्रतिशत की दर 30 लाख से लेकर 75 लाख रुपए तक के होम लोन पर लागू रहेगी। अगर लोन 75 लाख से ज्यादा है तो फिर ब्याज दर बढ़ कर 7.05 प्रतिशत हो जाएगी। अगर आप इसके बैंकिंग ऐप योनो से लोन के लिए अप्लाई करते हैं तो आपको 5 बीपीएस की छूट और मिलेगी। एसबीआई के रिटेल और डिजिटल बैंकिंग के प्रबंध निदेशक (एमडी) सी.एस. शेट्टी ने कहा कि होम फाइनेंस में एसबीआई एक मार्केट लीडर है और होम लोन मार्केट में ग्राहकों के सेंटीमेंट को देखते हुए ब्याज दरों को कम रखा जाता है। हमें विश्वास है कि यह नया फैसला होम लोन लेने वालों और रियल इस्टेट इंडस्ट्री दोनों के लिए अच्छा होगा। ग्राहक योनो के जरिए होम लोन के लिए अप्लाई कर 5 बीपीएस की और छूट पा सकते हैं। बता दें कि पिछले वित्त वर्ष में बैंक ने अपनी होम लोन की ब्याज दरें घटाकर 6.70 प्रतिशत कर दी थी। यह 31 मार्च तक के लिए थी और अप्रैल में बैंक ने फिर से इसे बढ़ाकर 6.95 प्रतिशत पर कर दिया था। पर कोरोना की दूसरी लहर को देखते हुए और बैंकिंग इंडस्ट्री में पहले से ही कुछ कम दरों के चलते बैंक ने फिर से इसे पुरानी दर पर ला दिया है।

अप्रैल में 119.27 बिलियन यूनिट बिजली की खपत रही, पिछले साल के मुकाबले 41 प्रतिशत का उछाल

नई दिल्ली , एजेंसी। कोरोना की दूसरी लहर का कारोबारी गतिविधियों पर ज्यादा असर नहीं दिख रहा है। इसकी गवाही देश में बिजली खपत के आंकड़े दे रहे हैं। बिजली मंत्रालय के डाटा के अनुसार, अप्रैल में देश में 119.27 बिलियन यूनिट बिजली की खपत रही है। एक साल पहले की समान अवधि के मुकाबले इसमें 41 प्रतिशत का उछाल रहा है। इस साल अप्रैल में एक दिन में सबसे ज्यादा बिजली खपत का भी नया रिकॉर्ड बना है। पिछले महीने एक दिन में सबसे ज्यादा 182.55 गीगावाट बिजली की खपत रही है। यह पिछले साल अप्रैल के रिकॉर्ड 132.73 गीगावाट से 38 प्रतिशत ज्यादा है। अप्रैल 2020 में लॉकडाउन के कारण अधिकांश कारोबारी गतिविधियों पर रोक लगी हुई थी। इस कारण 84.55 बिलियन यूनिट बिजली की खपत हुई थी। जबकि अप्रैल 2019 में 110.11 बिलियन यूनिट बिजली की खपत रही थी। इसी तरह से एक दिन की सबसे

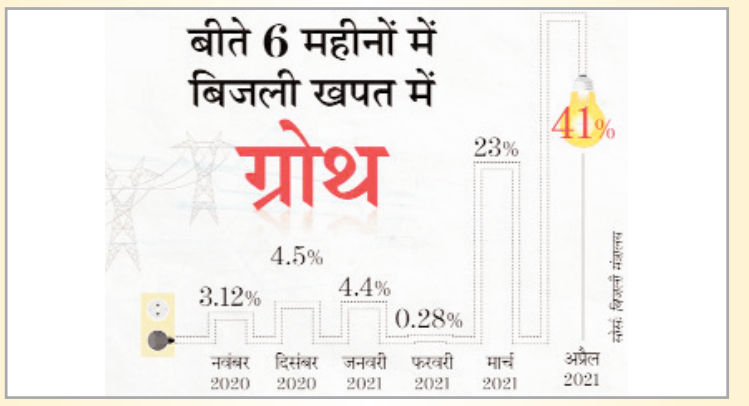

ज्यादा खपत भी 2019 के मुकाबले 2020 में कम रही थी। अप्रैल 2019 में एक दिन की सबसे ज्यादा खपत 176.81 गीगावाट रही थी। जानकारों का कहना है कि पिछले साल लॉकडाउन में कारोबारी गतिविधियां थमने के कारण बिजली की खपत में कमी रही थी। इस कारण इस साल अप्रैल में खपत और डिमांड में अच्छी ग्रोथ रही है। जानकारों के मुताबिक, इस साल बिजली खपत की ग्रोथ बताती है कि कमर्शियल और इंडस्ट्रियल स्तर पर बिजली डिमांड में रिकवरी हो रही है। हालांकि, जानकार चेतावनी देते हैं कि कोविड-19 संक्रमण को रोकने के लिए पूरे देश में लगाए जा रहे लॉकडाउन का आने वाले महीनों में बिजली खपत पर प्रतिकूल असर पड़ सकता है। पिछले साल 6 महीने बाद सितंबर में बिजली खपत में 4.6 प्रतिशत की ग्रोथ दर्ज की गई थी। इसके बाद अक्टूबर में 11.6 प्रतिशत की ग्रोथ रही थी। हालांकि, सर्दियां शुरू होने के कारण नवंबर में बिजली खपत की ग्रोथ घटकर 3.12 प्रतिशत रह गई थी। दिसंबर में बिजली खपत में बढ़ोतरी के कारण 4.5 प्रतिशत की ग्रोथ रही थी। जबकि जनवरी 2021 में 4.4 प्रतिशत की ग्रोथ रही थी।

मार्च 2021 में 23 प्रतिशत की ग्रोथ रही: इस साल फरवरी में बिजली खपत में 0.28 प्रतिशत की मामूली ग्रोथ रही थी। फरवरी 2020 की 103.81 बिलियन यूनिट के मुकाबले इस साल फरवरी में 104.11 बिलियन यूनिट बिजली की खपत रही। 2020 के लीप ईयर होने के कारण फरवरी में बिजली की खपत ज्यादा रही थी। हालांकि, इस साल मार्च में बिजली की खपत में 23 प्रतिशत की ग्रोथ रही। मार्च 2020 की 98.95 बिलियन यूनिट के मुकाबले इस साल मार्च में 121.51 बिलियन यूनिट बिजली की खपत रही।

सड़क निर्माण पर दो साल में 15 लाख करोड़ खर्च करेगी सरकार

नई दिल्ली, एजेंसी। केंद्र सरकार आने वाले समय में इंफ्रास्ट्रक्चर में बड़ा निवेश करने जा रही है। केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने शनिवार को बताया कि सरकार इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट को सबसे ज्यादा प्राथमिकता दे रही है। सरकार ने अगले दो साल में सड़क निर्माण में 15 लाख करोड़ रुपए खर्च करने का लक्ष्य तय किया है।

हर रोज 40 किलोमीटर हाईवे बनाने का लक्ष्य: नितिन गडकरी ने भरोसा जताया कि सड़क परिवहन मंत्रालय चालू वित्त वर्ष में हर रोज 40 किलोमीटर हाईवे निर्माण के लक्ष्य को पा लेगा। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि सरकार ने सड़क क्षेत्र में 100 प्रतिशत प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को मंजूरी दे दी है। उन्होंने कहा कि भारत में 2019-2025 तक के लिए नेशनल इंफ्रास्ट्रक्चर पाइपलाइन जैसे प्रोजेक्ट पहली बार लाए गए हैं।

घरेलू शेयर बाजार में उठा-पटक जारी रह सकती है

नई दिल्ली, एजेंसी। घरेलू शेयर बाजार में पिछले हफ्ते बहुत उठा-पटक हुई। सप्ताह की शुरुआत शेयर बाजार ने अच्छी की थी। एनएसई का निफ्टी 15,000 पॉइंट का लेवल छूने में कामयाब रहा। लेकिन इंडेक्स अपनी बढ़त को कायम नहीं रख पाया। शुक्रवार को ऊपरी स्तरों पर भारी बिकवाली देखी गई।

विदेशी संस्थागत निवेशकों ने शुक्रवार को 3,000 करोड़ रुपए से ज्यादा की बिकवाली की। अमेरिका भारत से अपने नागरिकों को लौटने और यहां से उड़ानें बंद करने की बात कर रहा है। कोविड के बढ़ते मामले घरेलू बाजार के लिए चिंता का विषय बने हुए हैं। उसको अगले हफ्ते विधानसभा चुनावों के नतीजों का इंतजार होगा।

घरेलू शेयर बाजार में उठा-पटक अगले हफ्ते भी हो सकती है। लेकिन एनएसई का निफ्टी 14,300 से 14,900 के दायरे में रह सकता है।

मनरेगा में काम मांगने वालों की संख्या सात साल में सबसे ज्यादा, कोविड के चलते मजदूरों का गांव लौटना बड़ी वजह

नई दिल्ली, एजेंसी। वालों में परिवारों और लोगों की संख्या पिछले सात साल में सबसे ज्यादा रही। गांवों में काम की मांग बढ़ने की सबसे बड़ी वजह कोविड के चलते मार्च-अप्रैल के दौरान बड़ी संख्या में मजदूरों की घर वापसी हो सकती है।

मनरेगा के डैशबोर्ड से मिली जानकारी के मुताबिक, इस साल अप्रैल में 2.6 करोड़ परिवार और 3.7 करोड़ लोग रोजगार ढूंढ रहे थे। प्रतिशत के हिसाब से देखें तो पिछले साल से 91 प्रतिशत ज्यादा परिवारों और 85 प्रतिशत ज्यादा लोगों को रोजगार की जरूरत थी। दो साल पहले यानी अप्रैल 2019 में दो करोड़ परिवार और तीन करोड़ लोग इस ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना के तहत काम तलाश रहे थे।

सिर्फ 1.52 करोड़ परिवारों और 2.07 करोड़ लोगों को काम मिल पाया: इसका नेगेटिव पहलू यह है कि इस रोजगार गारंटी योजना के तहत काम मांगने वाले हर शख्स को काम नहीं मिल पाया। आंकड़ों के मुताबिक, पिछले महीने सिर्फ 1.52 करोड़ परिवारों और 2.07 करोड़ लोगों को ही काम मिल पाया था। यानी मनरेगा में रोजगार मांगने वाले हर 100 परिवार में से सिर्फ 58 और हर 100 लोगों में 56

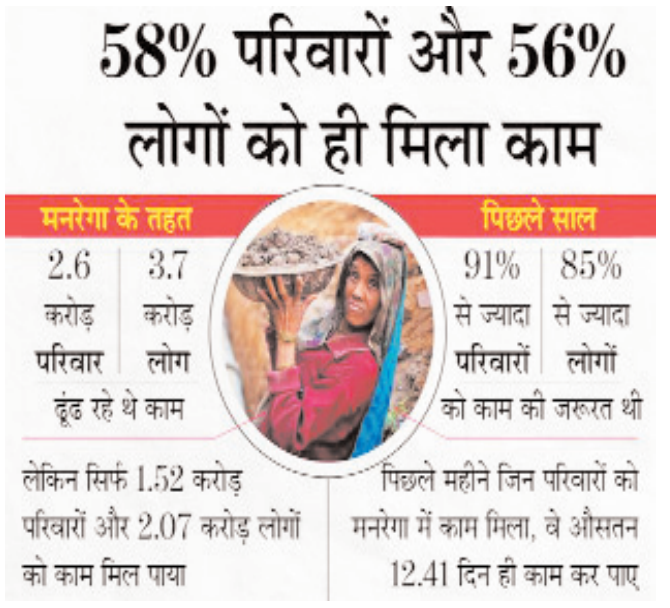

को ही काम मिला। इसी तरह अप्रैल में मनरेगा के तहत 18.87 करोड़ श्रम दिवस (एक व्यक्ति के लिए इतने दिन का काम) का काम हुआ। औसत के हिसाब से देखें तो जिन परिवारों को काम मिला वे सिर्फ 12.41 दिन काम कर पाए। अगर पिछले वित्त वर्ष की बात करें तो उसमें मनरेगा के तहत 7.56 करोड़ परिवारों और 11.19 करोड़ लोगों को काम मिला और कुल 389.31 करोड़ श्रमिक दिवस का काम हुआ। इस हिसाब से रोजगार पाने वाले हर परिवार को एक साल में औसतन 51.51 दिन का काम मिला। गौरतलब है कि मनरेगा कानून के तहत एक वित्त वर्ष में हर उस ग्रामीण परिवार को कम से कम 100 दिन का रोजगार मुहैया कराने की व्यवस्था की गई, जिसके वयस्क सदस्य अपनी मर्जी से शारीरिक मेहनत वाला काम करने को तैयार हों। लेकिन यह मकसद कभी पूरा नहीं हो पाया। गौरतलब है कि

मनरेगा में काम की मांग देती है शहरों और गांवों में बेरोजगारी का अंदाजा

जानकारों के मुताबिक, मनरेगा के तहत रोजगार की मांग से पता चलता है कि ग्रामीण और शहरी इलाकों में कितनी बेरोजगारी है। इससे इसका भी अंदाजा लगाया जा सकता है कि लेबर मार्केट में छुपी हुई बेरोजगारी कितनी है। मनरेगा के तहत रोजगार की मांग में तेज उछाल आने की वजह एक बार फिर लोगों की गांव-घर वापसी का दौर शुरू होना और वहां खेती किसानी के अलावा दूसरे काम का अभाव होना है।

सरकार ने मौजूदा वित्त वर्ष के लिए मनरेगा के तहत 73,000 करोड़ रुपए खर्च करना तय किया है। सरकार ने 2020-21 में 1.11 लाख करोड़ रुपए जबकि 2019-20 में 68,265 करोड़ रुपए खर्च करने का प्रावधान किया था। सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनॉमी के मुताबिक, 25 अप्रैल को खत्म हफ्ते में गांवों में बेरोजगारी का आंकड़ा मामूली बढ़त के साथ 6.37 प्रतिशत रहा।

कोवीशील्ड का भारत से बाहर उत्पादन करने की योजना बना रहा सीरम इंस्टीट्यूट, जल्द हो सकती है घोषणा

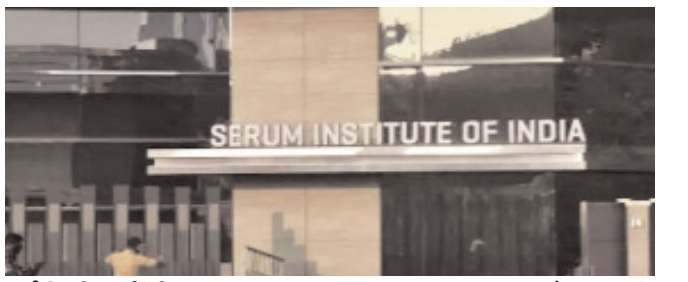

नई दिल्ली, एजेंसी। सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया कोरोना वैक्सीन का उत्पादन भारत से बाहर करने की योजना बना रहा है। कच्चे माल की आपूर्ति में दिक्कत के चलते कंपनी यह योजना बना रही है। एक अखबार से बातचीत में एसआईआई की सीईओ अदार पूनावाला ने यह बात कही है। एसआईआई एस्ट्राजेनेका की कोवीशील्ड वैक्सीन का उत्पादन करती है। अदार पूनावाला का कहना है कि भारत से बाहर उत्पादन की घोषणा जल्द हो सकती है। पूनावाला ने पिछले सप्ताह ही कहा था कि सीरम इंस्टीट्यूट जुलाई के बाद अपना उत्पादन 100 मिलियन डोज तक बढ़ाने में सक्षम होगा। इससे पहले मई के अंत तक उत्पादन क्षमता बढ़ाने की टाइमलाइन तय की गई थी। इस समय देश के कई राज्य कोविड वैक्सीन की कमी का सामना कर रहे हैं। अदार पूनावाला का कहना है कि उन्हें उम्मीद है कि 6 महीने में सीरम इंस्टीट्यूट की उत्पादन क्षमता 2.5 बिलियन से 3 बिलियन डोज सालाना हो जाएगी। पूनावाला ने कहा कि भारत से आने वाले यात्रियों पर रोक लगने पहले ही वह लंदन पहुंच गए थे। देश में कोरोना के केस बढ़ने के कारण ऑक्सीजन, दवाएं और अन्य जरूरी उपकरणों की कमी हो गई है। सरकार को यह सामान विदेशों से आयात करना पड़ रहा है। वैज्ञानिकों का कहना है कि देश में कोरोनावायरस 3-5 मई के दौरान पीक पर पहुंच सकता है। देश में कोरोना की दूसरी लहर हर दिन खतरनाक होती जा रही है। शुक्रवार को यहां रिकॉर्ड 4 लाख 1 हजार 911 नए संक्रमितों की पहचान हुई। यह दुनिया के किसी भी देश में एक दिन में मिले संक्रमितों की सबसे बड़ी संख्या है।

स्वत्वाधिकारी,मुद्रक,प्रकाशक एवं संपादक नागेश नरवरिया द्वारा जय माता प्रिंटर्स म.नं. 1 अमर दाल मिल के पास पेमदीपुरा चिकलोद रोड के पास बापू कालोनी जहांगीराबाद भोपाल मप्र से मुद्रित एवं म.नं. 51 एक्सटेंशन शिवलोक कॉलोनी फेस-3, खजूरी कलां रोड,तह. हुजूर जिला भोपाल से प्रकाशित। संपादक :- नागेश नरवरिया (समस्त विवादों का न्यायक्षेत्र भोपाल रहेगा।)